हिंदी के नाममाला कोशों में शब्द-विज्ञान

श्रुति

प्राचीनतम समझा जाने वाला वैदिक साहित्य श्रुत पद्धति से सँजोया जाता था। इसके तहत शिष्य गुरु द्वारा उच्चरित वैदिक श्लोक सुन कर याद रखते थे और बाद में शिष्यों को इसी पद्धति से सिखाया जाता था। कुछ समय बाद लगने लगा कि सुन कर सारे शब्दों को याद रखना सम्भव नहीं है। इसलिए कठिन वैदिक शब्दों की उनके समस्त अर्थों के साथ एक सूची बनाई गयी जिसे *निघण्टु* कहा गया। *निघण्टु* में शब्द-संकलन की दोनों ही पद्धतियों, समानार्थक (एक ही अर्थ के लिए अनेक शब्द अर्थात् पर्याय) एवं अनेकार्थक (एक शब्द के अनेक अर्थ), के मिश्रित रूप में शब्दों के अर्थ संकलित किये गये। जैसे पानी का अर्थ स्पष्ट करते हुए 101 शब्दों की गणना की गयी और पृथ्वी का अर्थ स्पष्ट करने के लिए 51 पर्याय शब्द दिये गये। इसलिए *निघण्टु* को विश्व का प्रथम कोश माना जाता है। महाभारत के मोक्षधर्म पर्व (342, 86-87) के अनुसार प्रथम *निघण्टु* के रचयिता भगवान कश्यप थे। कालांतर में अन्य निघण्टुओं की रचना भी हुई और आयुर्वेद तक के *निघण्टु* बनाये गये। इसका भाष्य या टीका *निरुक्त* कहलाया। इस समय उपलब्ध यास्क मुनि द्वारा रचित *निरुक्त* में ध्वनि, पद तथा अर्थ पर भी विचार किया है। शब्दों की व्युत्पत्ति के आधार पर अर्थ देना, एक से अधिक अर्थ होने पर अनेक व्युत्पत्तियों से उसे जोड़ना और अर्थ स्पष्ट करने के लिए आवश्यकता होने पर प्रयोग करना— ये तीन विशेषताएँ कोशकला के विकास में यास्क का महत्त्वपूर्ण योगदान कही जा सकती हैं। सातवीं सदी ईसा पूर्व में निघण्टु प्रकरण द्वारा यास्क ने अपने *निरुक्त* में जिस प्रथम मानक कोश का निर्माण किया, उसी के विकासक्रम में संस्कृत और हिंदी नाममाला कोशों का उद्‌भव और विकास हुआ।

ईसा की चौथी-पाँचवीं शती से लेकर अट्ठारहवीं शती की अवधि को नाममाला कोशों का रचनाकाल माना जा सकता है। इस समय प्रायः सभी कोशकारों ने 'नाम' अर्थात् संज्ञा शब्दों को महत्त्व देते हुए कोश में उन्हें माला के मनकों की तरह संयोजित किया— या तो पर्याय शैली में या फिर अनेकार्थ पद्धति पर। चूँकि आरम्भिक साहित्य

॥ श्रीः ॥

अमरकोशः ।

श्रीमदमरसिंहविरचितः ।

मुरादाबादवास्तव्यश्रीयुतगौडवंशावतंसभोला-
नाथात्मजपण्डितरामस्वरूपकृतभाषाटी-
कया शब्दानुक्रमणिकया च समेतः ।

सोऽयं

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्)-यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९८२, शके १८४७.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षने
स्वाधीन रक्खा है ।
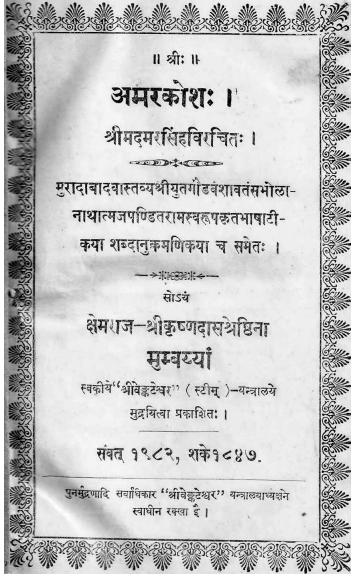
परवर्ती कोशों पर सर्वाधिक प्रभाव *अमरकोश* का ही पड़ा। ... लगभग सौ कोश *अमरकोश* से प्रभावित होकर रचे गये। प्रायः इन सभी कोशकारों ने 'नाम', 'नाममाला' या 'माला' शब्द अपने-अपने कोश के साथ जोड़ा ... *अमरकोश* को नामलिंगानुशासन भी कहते हैं क्योंकि इसमें पहली बार 'नाम' और 'लिंग' दोनों को समान महत्त्व दिया गया। शब्द-संयोजन की दृष्टि से भी *अमरकोश* में पहली बार शब्दों को वर्णानुसार संकलित किया गया।

पद्यात्मक था, इसलिए काव्य की आवश्यकताओं के अनुसार शब्दों के पर्यायों की अधिक माँग रहती थी। दूसरे, कोशों के भी छंदबद्ध होने से उसमें सारे शब्दों का संयोजन सम्भव नहीं था, इसलिए कोशकारों ने मात्र संज्ञा शब्दों (यहाँ तक कि क्रियाओं के भी नामवाचक रूप बनाकर उनके पर्याय दिये) के पर्यायों तक स्वयं को सीमित रखा। संस्कृत में संज्ञा शब्द का वाचक शब्द 'नाम' है, इसलिए इन कोशों को 'नाममाला' कोश कहा गया।

प्रमाण न होने के कारण प्रथम नाममाला कोश के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन इस दृष्टि से पाँचवीं-छठी शताब्दी में रचित *अमरकोश* का विशिष्ट स्थान है। *अमरकोश* के पूर्व व्याडि द्वारा *उत्पलिनी कोश,* कात्य द्वारा *नाममाला,* भागुरि द्वारा *त्रिकाण्ड कोश,* अमरदत्त द्वारा *अमरमाला,* वाचस्पति द्वारा *शब्दार्णव,* धनवन्तरि द्वारा *धनवन्तरि निघण्टु,* महाक्षपणक द्वारा *अनेकार्थ मंजरी* और विक्रमादित्य द्वारा *संसारावर्त* जैसे कई कोशों की रचना का पता चलता है। अमर सिंह और उनके समकालीन कई कोशकारों जैसे हलायुध भट्ट (*अभिधान रत्नमाला*) और आचार्य यादव प्रकाश (*वैजयन्ती कोश*) ने अपने कोशों के लिए इन्हीं से सामग्री ली। लेकिन *अमरकोश* पूर्व रचित ये हस्तलिखित कोश आज उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए परवर्ती कोशों पर सर्वाधिक प्रभाव *अमरकोश* का ही पड़ा। संस्कृत, पालि, प्राकृत, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में लगभग सौ कोश *अमरकोश* से प्रभावित और प्रेरित होकर रचे गये। प्रायः इन सभी कोशकारों ने 'नाम', 'नाममाला' या 'माला' शब्द अपने-अपने कोश के साथ जोड़ा, पर नाममाला शब्द का प्रथम प्रयोग किस कोशकार ने कब किया, इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता है। *अमरकोश* को नामलिंगानुशासन भी कहते हैं क्योंकि इसमें पहली बार 'नाम' और 'लिंग' दोनों को समान महत्त्व दिया गया। शब्द-संयोजन की दृष्टि से भी *अमरकोश* में पहली बार शब्दों को वर्णानुसार संकलित किया गया। स्थल, उपयोग, विषय और उनके परस्पर अंत:संबंधों के आधार पर शब्दों को तीन काण्डों और 24 वर्गों में अलग-अलग संगृहीत किया गया। इसमें समानार्थी और अनेकार्थी पद्धति पर संकलित शब्दों के अर्थ और परिभाषाएँ भी दी गयीं। अमरकोश की शब्द वर्गीकरण की इसी प्रणाली ने बाद के सभी कोशकारों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। हिंदी के चार कोशकारों, मियाँ नूर *(प्रकाशनाममाला)*, भिखारीदास *(नामप्रकाश)*, हरिचरणदास *(कर्णाभरण)* और सुवंश शुक्ल *(उमराव कोश)* ने तो घोषित रूप से *अमरकोश* का पूर्ण अनुसरण किया। दूसरे कोशकारों ने हालाँकि अन्य ग्रंथों की भी सहायता ली लेकिन उनका भी आधार *अमरकोश* ही रहा।

इस तरह से शब्द-संयोजन की दो पद्धतियाँ प्रचलित हुईं। पहली, *अमरकोश* के आधार पर

शब्दों को वर्गों में बाँटकर अर्थात् वर्गात्मक शब्द-संयोजन और दूसरी पद्धति, वर्गहीन शब्द-संयोजन। सन् 1560 में नंददास द्वारा रचित *नाममाला* (मानमाला) के प्रकाश में आते ही शब्द-संयोजन की एक सर्वथा नवीन और रोचक पद्धति का पता चला, जिसमें शब्दों के पर्यायों के साथ राधा के मानवर्णन की कथा भी कही गयी। वैसे तो नंददास ने अपने कोश को *अमरकोश के भाई* (*अमरकोश* की तर्ज़ पर) की तरह रचे जाने की घोषणा की थी, पर यदि इसमें से मानवर्णन अलग कर दें तो इसे विशुद्ध वर्गहीन कोशों की कोटि में रखा जा सकता है। शब्द-संयोजन की इन तीनों ही पद्धतियों में बाहरी भिन्नता तो दिखती है फिर भी इनमें आंतरिक एकरूपता है। वर्गहीन शब्द-संयोजन और मानमाला पद्धति में भी शब्दों का संकलन क्रम वर्गात्मक कोशों के समान ही है, अर्थात् एक जाति विशेष के शब्द, बिना वर्ग का नाम दिये, एक साथ क्रमबद्ध रूप से रखे गये हैं, फिर दूसरी जाति विशेष के शब्द संयोजित हैं।

इसी प्रकार अनेकार्थ कोशों के लिए भी शब्द संकलन के स्रोत भिन्न-भिन्न होने पर भी उनमें शब्द-संयोजन की एक ही शैली प्रयुक्त हुई है। प्रायः इन सभी कोशों में संकलित शब्द रूढ़ और साहित्य में प्रचलित हैं, लेकिन शब्दों का कोई निश्चित क्रम नहीं है। साथ ही इन अनेकार्थी कोशों में कोई कथा भी नहीं है।

नाममाला कोशों में शब्द-संकलन एवं संयोजन की इन अतिविशिष्ट शैलियों ने बाद के हिंदी कोशों के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं पर भी अपना प्रभाव छोड़ा। पर कोश-विज्ञान के मूलभूत सिद्धांत 'उचित शब्द की समय पर प्राप्ति' का इनमें अभाव था। इच्छित शब्द की प्राप्ति सहजता से नहीं होती थी। वर्गहीन कोशों में तो यह मुश्किल था ही, वर्गात्मक कोशों में भी किसी शब्द विशेष को कोशकार ने स्वविवेक से किस वर्ग में रखा हो, यह अनुमान लगाना कठिन था, सम्भवतः इन कोशों को अनुक्रमणिका की आवश्यकता थी। वैसे भी वर्णानुसार संयोजित अंग्रेज़ी कोशों के प्रचलन में आ जाने से नाममालाएँ अतीत का हिस्सा बनने लगीं। पर आज थिसॉरसों (समांतर कोशों) की बढ़ती लोकप्रियता ने फिर विषयानुक्रम शब्द-संयोजन पद्धति को महत्त्वपूर्ण बना दिया है। ऐसे में विषयानुसार शब्द-संयोजन के आदि स्रोत नाममालाओं में शब्द-विज्ञान का गहन अध्ययन अपेक्षित और प्रासंगिक है।

हिंदी नाममाला कोशों में शब्द-विज्ञान

प्राचीन ऋषियों ने सभी शास्त्रीय चिंतनों का केंद्र वेद को माना है।[1] सृष्टि के आरम्भ में सभी पदार्थों के नाम (संज्ञा), शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ (संदर्भ के अनुसार) और उनकी रचनाएँ (अर्थात् विभक्ति, वचन आदि के अनुसार रूप), वेद के शब्दों से ही निर्धारित किये गये।[2] दूसरे शब्दों में उस समय समाज में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता था, उसके रूप वेद के आधार पर तय किये गये। महर्षि यास्क के अनुसार शब्दों के सबसे बड़े और सबसे छोटे गुण के आधार पर उनके नाम (संज्ञाएँ) रखे गये जो समाज में व्यवहृत हुए।[3] इस प्रकार शब्द संबंधी तत्त्व-चिंतन वेदों से ही प्रारम्भ हो गया। वेद (ऋक्, यजुः, साम, अथर्व) और वेदांग (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छंद, कल्प, ज्योतिष) के नियमित

---

[1] कपिलदेव द्विवेदी (1994), *भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी : 483

[2] आचार्य युधिष्ठिर मीमांसक (1983), *संस्कृत व्याकरण का इतिहास* (छांदोग्य संस्करण), चौखम्भा ओरिएंटालिया, वाराणसी : 4

[3] उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' (1995), *यास्क प्रणीतं निरुक्तम् चौखम्भा विद्याभवन,* वाराणसी : 3, 'व्याप्तिमत्वात्तु शब्दस्य! अणीयस्त्वाच्च, शब्देन संज्ञाकरण व्यवहारार्थ लोके। तेखां मनुष्यवद् देवताभिधानम्।' निरुक्त -1 : 2 विस्तार के लिए देखें.

अध्ययन-अध्यापन के साथ ही शब्द संबंधी तत्त्व-चिंतन की परम्परा विकसित हुई। इनमें से शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त द्वारा शब्द के बोले जाने वाले रूपों, ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान तथा शब्दों के उद्‌भव (व्युत्पत्ति) और अर्थ- विज्ञान पर विचार किया जाता था।

आज शब्द-विज्ञान में हम जिन तथ्यों (शब्द, परिभाषा, वर्गीकरण, रूप-परिवर्तन, अर्थ-परिवर्तन आदि) का अध्ययन करते हैं उनका संदर्भ वैदिक साहित्य और उसके बाद के भी साहित्य में उपलब्ध है। इस प्रकार के अध्ययन के परिणामस्वरूप अनेक पारिभाषिक शब्द *गोपथ ब्राह्मण* में देखे जा सकते हैं।[4] प्रातिशाख्यों तथा उनमें संकलित अनुक्रमणियों[5] में भी शब्दों के व्याकरणिक विवेचन और नाम संकलित हैं। *अमरकोश* तो बहुत बाद का है, इसके पहले के *निघण्टु* एवं *निरुक्त* और बीच के लुप्त हो चुके अन्य *निरुक्त* और कोश-साहित्य में भी शब्दों का वैज्ञानिक विवेचन हुआ है, भले ही इसे शब्द-विज्ञान नाम न दिया गया हो। भाषा (हिंदी) की नाममाला (संज्ञा-शब्दों का संग्रह) शब्द-संकलन, संयोजन एवं अर्थ-कथन आदि में *अमरकोश* के प्रभाव से धीरे-धीरे कुछ हद तक ही मुक्त हो पायी।

भर्तृहरि ने शब्द और अर्थ को एक ही तत्त्व के दो अंग कहा है।[6] शब्द का उल्लेख होते ही अर्थ की प्रकट अथवा प्रच्छन्न उपस्थिति अनिवार्य है। *निघण्टु* और उसके बाद के कोश एवं संस्कृत व भाषा के नाममाला कोश समय के साथ विलुप्त होते जा रहे अर्थों के प्रकटन तथा शब्दों को लुप्त होने से बचाने में सहायक हुए, वहीं अनुक्रमणिकाएँ शब्दों या नामों की स्मृति बनाये रखने के लिए। नाममालाओं में संकलित शब्दों में 'नाम' की प्रधानता है। आख्यात, उपसर्ग एवं निपात[7] (अव्यय) की उपस्थिति या तो नामों के माध्यम से है अथवा बहुत कम। प्रकृति (धातु) और प्रत्यय के संयोग से निर्मित शब्दों (नाम) का मूल या तो धातु है[8] अथवा आख्यात[9]। 'शब्दयोनिश्च धातवः' (*अमरकोश* 3-3-65) के अनुसार तो समस्त शब्द धातु से ही निर्मित हैं। नाममालाओं में उपसर्ग, निपात (अव्यय), भिन्न-भिन्न नामों से प्रकीर्ण खण्ड में उपलब्ध हैं तथा क्रियार्थक आख्यात, प्रत्ययों (कृदंत अथवा तद्धित) के योग से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ या विशेषण आदि शब्दों के रूप में संगृहीत हैं। शब्दों के समसामयिक प्रयोग या पूर्व आचार्यों के आग्रह से कभी-कभी नाममालाकारों ने क्रियार्थक शब्द को संज्ञा अथवा विशेषण रूप में संकलित कर लिया है किंतु ऐसे प्रयोग विरल हैं।[10]

---

[4] सत्य प्रकाश (1968) *मानक अंग्रेज़ी हिंदी कोश,* हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग : 11 ओंकारं पृच्छाम : को धातु : किं प्रातिपादिकं किं नामाख्यातं, किं लिंग किं वचनं का विभक्ति : कः प्रत्ययः कः स्वर उपसर्गो निपातः, किं वै व्याकरणं, को विकार : को विकारी कति मात्र : कति वर्ण : कत्यक्षर : कतिपद : क : संयोग : किं स्थानानुप्रदानकरण शिक्षका : किमुच्चारयन्ति किं छंद : को वर्ण इति पूर्वे प्रश्ना : गोपथ ब्राह्मण 1/1/24, विस्तार के लिए देखें.

[5] आर्षानुक्रमणी (मंत्र क्रम से ऋषियों के नाम संकलन) छंदानुक्रमणी, देवतानुक्रमणी, अनुवाकानुक्रमणी में क्रम से ऋषि छंद, देवता, अनुवाकों का संकलन नाममालाओं के संकलन से पूर्व हो चुका था.

[6] के.ए.एस. अय्यर (1981), *भर्तृहरि वाक्यपदीय (अनुवादित द्वारा रामचंद्र)*, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 'एकस्यैवात्मनों भेदौ शब्दार्थावपृथक्स्थितौ' - वाक्यपदीय : 2-31.

[7] वही : 2; 'चत्वारि पद जातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपातश्च... भावप्रधानमाख्यातम्, सत्वप्रधानानि नामानि', निरुक्त-1/1.

[8] सत्यप्रकाश वही : 11; 'नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम् पतंजलि *महाभाष्य* 3/3/1.

[9] वही; तत्रनामानि आख्यातजानि इति शाकटायन : नैरुक्तसमयश्च निरुक्त- 1/12.

[10] शिवमूर्ति शर्मा (1980), *आचार्य हेमचंद्र रचित देशी नाममाला का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन,* देवनगर प्रकाशन, जयपुर : 47 ; में हेमचंद्र द्वारा देशीनाममाला में 'आख्यात्' पदों के आख्यान पर आक्षेप के समाधान में कहते हैं कि आचार्य ने यदि कहीं आख्यात पदों का प्रयोग किया भी है तो वे मूल आख्यात पद न होकर 'कृदंती' पद हैं. उनका आख्यान संज्ञा या विशेषण पद के रूप में है न कि 'आख्यात पद' के रूप में, 'मोरे अल्ललो कुक्कड़े अलंपो अचालि दुद्दिणये विण्शोहम्मि अअंखो अज्झस्सं सार्वअमक्खए अणहं ॥ 1.1 इस पद में 'अज्झस्सं' पद यद्यपि धात्वादेश है फिर भी उपर्युक्त कारिका में यह विशेषण पद रूप में प्रयुक्त हुआ है.

वृत्तरत्नाकर : प्रथम पृष्ठ / पांडुलिपि

अत: नाममाला कोशों में शब्द संकलन और संयोजन के अध्ययन के लिए यह रूपरेखा उचित होगी—

(1) **शब्दार्थ क्रम :** (क) शब्दावली का चयन, आधार एवं स्रोत,
(ख) चयनित शब्दावली का परिमाण, और
(ग) संकलित शब्दों का वर्ग-विभाजन।

(2) **शब्दार्थ संयोजन :** (क) पर्याय शैली में संयोजन,
(ख) अनेकार्थी शैली में संयोजन, और
(ग) अक्षरानुक्रम पद्धति में संयोजन।

(3) हिंदी पर्याय कोशों में शब्दार्थ संयोजन

(1) शब्दार्थ क्रम : शब्दार्थ क्रम का अर्थ है शब्दों एवं उनके अर्थों का क्रमिक संकलन, जो दो प्रक्रियाओं के पूर्ण होने पर तय होता है, शब्दावली का चयन (संकलन) एवं शब्दों का संयोजन। शब्दावली के चयन अथवा संकलन के विषय में अनेक विद्वानों ने बहुत कुछ कहा है। अनेक आधार और नियम स्थिर किये गये हैं। हिंदी नाममाला कोशों के अध्ययन के संदर्भ में दो आधार मुख्य माने जा सकते हैं— सभी नाममालाओं का सामान्यीकरण (एक ही वर्ग में स्थिर) कर उनमें कुल संकलित शब्दों तथा उनके संकलन के आधार का अध्ययन करना, और नाममालाओं को उनकी विशेषताओं के आधार पर समानार्थी, अनेकार्थी और नाममालाओं में विभक्त कर इनका अध्ययन करना। इसमें समानार्थी/अनेकार्थी/नाममालाओं का आपस में और एक समानार्थी एवं अनेकार्थी व उसके समान नाममाला की परस्पर तुलना भी समाहित है।

(क) शब्दावली का चयन, आधार एवं स्रोत

प्राचीन संस्कृत कोश केवल एक शब्द सूची थे, इसलिए उनके शब्द संकलन के आधार *निघण्टु* और *निरुक्त* वैदिक शब्दों तक ही सीमित थे। लौकिक संस्कृत कोशों के लिए दो प्रचलित आधार रहे— लिखित सामग्री (पूर्वरचित कोश अथवा साहित्य) 2. कथ्य (वाचिक) सामग्री। वाचिक सामग्री

अपेक्षाकृत कम प्रयुक्त हुई क्योंकि उस समय का साहित्य और कोश भाषा के सुसंस्कृत या परिनिष्ठित रूप को ही महत्त्व देते थे और कथित शब्द उसके अनुरूप नहीं होते थे। *अमरकोश* की रचना के बाद बने कोशों का आधार मुख्यतया *अमरकोश* ही रहा। अत: हिंदी नाममाला कोशों के लिए शब्द संकलन के आधार और स्रोत संस्कृत कोश, पहले के हिंदी कोश और साहित्यिक ग्रंथ रहे। साथ ही कोशकार के व्यक्तिगत ज्ञान और रुचि का महत्त्व भी रहा।

(i) संस्कृत के कोश ग्रंथ[11]

अधिकतर नाममालाओं ने शब्द चयन के लिए संस्कृत नाममालाओं को ही खँगाला है। शब्द चयन की प्रक्रियानुसार इनके दो वर्ग हैं—

1. कुछ नाममालाकारों ने मात्र एक संस्कृत कोश को आधार मानकर गौण रूप से अन्य स्रोतों पर भी ध्यान दिया है। इनमें *अमरकोश* से प्रभावित और अनुवादित कोश *प्रकाशनाममाला, नामप्रकाश, कर्णाभरण* एवं *उमरावकोश* प्रमुख हैं। नंददास और बद्रीदास भी अपनी नाममालाओं के लिए कुछ हद तक *अमरकोश* के आभारी हैं। *अमरकोश* के अलावा अन्य कोशों जैसे सौरभि की एकाक्षर नाममाला ने भी कई कोशकारों (जैसे फ़क़ीरचंद-सुबोधचंद्रिका) को प्रभावित किया है।

2. कुछ नाममालाएँ केवल एक ग्रंथ पर आधारित न होकर कई संस्कृत कोशों पर आधारित हैं। इनमें *हमीरनाममाला* (समानार्थी कोश) ने संस्कृत के अनेकार्थक कोश, *नाममाला* (धनंजय), *मानमंजरी, हेमीकोश* सभी से समान रूप से मदद ली। चंदनराम ने भी क्षपणक द्वारा रचित अनेकार्थ समुच्चय, अमरकोश में संकलित अनेकार्थ और धनंजय द्वारा निर्मित अनेकार्थ, तीनों से अपना कोश निर्मित किया।

(ii) पूर्ववर्ती हिंदी कोश

प्रत्येक कोशकार अपने ग्रंथ को पूर्ण और प्रामाणिक बनाने के उद्देश्य से अपने पहले के कोशकारों द्वारा निर्मित कोश का भरपूर लाभ उठाता है। यह परम्परा आजतक विद्यमान है। इसमें अधिकतर कोशों में न सिर्फ़ शब्द-चयन अथवा शब्द संकलन बल्कि शब्द-संयोजन का क्रम भी अपरिवर्तित रहता है तथा साहित्य सृजन की प्रक्रिया नवीन शब्दों और परम्परागत शब्दों में नवीन अर्थों का सृजन भी करती है।

(iii) साहित्यिक ग्रंथ

साहित्य भाषा का मानक रूप तैयार करता है। अत: प्रत्येक काल में तत्कालीन साहित्यिक शब्दों का कोश संकलन सहज और निश्चित है। नाममाला कोशकारों में भिखारीदास ने भाषा ग्रंथों से, सुवंश शुक्ल (*उमराव कोश*) ने काव्यकारों के मतों को, नागराज डिंगल कोशकार ने अनेक साहित्यिक ग्रंथों के सारतत्त्व को तथा फ़क़ीरचंद ने अन्य कवियों द्वारा उच्चरित श्रव्य शब्दों को भी आधार बनाया है।

(iv) कोशकार का व्यक्तिगत ज्ञान एवं रुचि

कोशकार ज्ञान-विज्ञान के जिस क्षेत्र से अधिक सम्पर्क में रहता है, वह स्वाभाविक रूप से उस क्षेत्र से अधिक शब्दों का चयन करता है, इसलिए कुछ कोशों में कोशकारों की सांस्कृतिक अभिरुचि भी दिखाई पड़ती है।

(ख) चयनित शब्दावली का परिमाण

किसी कोश की श्रेष्ठता उसमें संकलित शब्दों और उनके सही अर्थों या पर्यायों पर निर्भर करती है न कि संकलित शब्द संख्या पर, फिर भी नाममाला कोशों में उनके महत्त्व की दृष्टि से संगृहीत

---

[11] रामचंद्र वर्मा (1952), *कोशकला,* साहित्यरत्नमाला, बनारस : 'आज (भी) नये शब्द ढूँढ़ने के लिए हम अपनी अकार भाषा 'संस्कृत' का ही आश्रय लेते हैं।' विस्तार के लिए देखें.

शब्दों की संख्या भी विचार करने योग्य है। इस संबंध में नाममालाकारों ने किसी निश्चित सिद्धांत का अनुकरण नहीं किया है। किसी संस्कृत कोश को आधार बनाकर शब्द संकलन करने वाले कोशकार ने प्राय: आधार कोश के सभी शब्दों को संगृहीत कर दिया है,[12] चारों अनुवादित कोश (*प्रकाशनाममाला, नामप्रकाश, कर्णाभरण, उमराव कोश*) तथा समस्त अनेकार्थी और समानार्थी कोशों में यह प्रवृत्ति दिखती है।

शब्द संकलन के अन्य प्रकार में संस्कृत शब्दों को हिंदी प्रवृत्ति के अनुसार रूप देकर संगृहीत किया गया है। भिखारीदास ने *नामप्रकाश* में स्पष्ट उल्लेख किया है कि भाषा में कोश ग्रंथ रचने के उद्देश्य से उन्होंने कुछ अक्षरों में अधिक 'विवेक' नहीं किया।[13]

(i) शब्द संख्या वृद्धि की प्रवृत्ति

प्राय: सभी कोशों में शब्द संख्या विस्तार की प्रवृत्ति दिखती है। एक ही शब्द के अनेक रूपों को अपने क्रम में प्रत्येक स्थान पर प्राय: उसी मात्रा और विवरण के साथ रखा गया है। इसके अतिरिक्त एक मूल शब्द से अनेक पर्याय बनाकर उनको प्राय: सभी समानार्थी कोशों में स्वतंत्र स्थान दिया गया है, जैसे— 'मेघ' के पर्याय शब्द— नीरद, जलमण्डल, जलह, जलवहण, जलधरण, जलवह, तोईद, तोयसद, जलमुक, जलमण्ड, तोयद, जलद आदि— 'जल' के पर्याय शब्दों से निर्मित हुए हैं। इस पद्धति (संस्कृत शब्दों का यथावत् संकलन) के अलावा अन्य कई पद्धतियों द्वारा भी शब्द संख्या में वृद्धि सम्भव हुई है। जैसे— अपनी ही बोली, भाषा में नये शब्दों को निर्मित कर, अन्य देशी भाषाओं के शब्दों का संग्रह कर, विदेशी भाषाओं के शब्दों का संग्रह कर, पेटे वाली पद्धति द्वारा, संदर्भ (अभिदेश) द्वारा।

इनमें से विदेशी शब्दों और पेटे वाली पद्धतियाँ थिसॉरस या अन्य कोशों के संदर्भ में उचित हैं, पर नाममाला कोश के संदर्भ में नहीं।

(ii) नये शब्द निर्मित करने की प्रक्रिया

इस क्रम में संस्कृत के अनेक शब्दों को परिवर्तित कर हिंदी के शब्दों का निर्माण और संकलन किया जाता रहा।
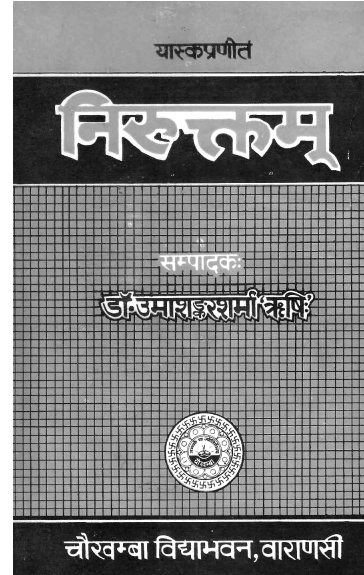
यास्क मुनि द्वारा रचित *निरुक्त* में ध्वनि, पद तथा अर्थ पर भी विचार किया गया है। शब्दों की व्युत्पत्ति के आधार पर अर्थ देना, एक से अधिक अर्थ होने पर अनेक व्युत्पत्तियों से उसे जोड़ना और अर्थ स्पष्ट करने के लिए आवश्यकता होने पर प्रयोग करना— ये तीन विशेषताएँ कोशकला के विकास में यास्क का महत्त्वपूर्ण योगदान कही जा सकती हैं। सातवीं सदी ईसा पूर्व में निघण्टु प्रकरण द्वारा यास्क ने अपने *निरुक्त* में जिस प्रथम मानक कोश का निर्माण किया, उसी के विकासक्रम में संस्कृत और हिंदी नाममाला कोशों का उद्भव और विकास हुआ।

[12] अज्ञेय (1967), *दिनमान,* भाग 3 : अंक 22, (जुलाई) : 26; 'हिंदी कोशकारों की एक प्रवृत्ति यह भी है कि वह व्यवहृत भाषा से सीधे शब्द-संकलन नहीं करते. संस्कृत, फ़ारसी और हिंदी-उर्दू के कोश लेकर शब्द-संकलन कर देते हैं'. संख्या लाखों तक पहुँच जाती है, पर उनमें कभी-कभी बहुत प्रचलित शब्द नहीं मिलते.

[13] भिखारीदास (1899), *नामप्रकाश,* गुलशन अहमद यंत्रालय, प्रतापगढ़ : 2 प्रकाशन, वर्ष 1899) 'य ज रि ऋ स श ष ख छ क्ष न ण ग्य ज्ञ ठान्योएक। भाषा बनन बूझि कै कियो न एक विवेक॥'

कोशकार शब्दों की संख्या में वृद्धि के लिए पहले दिये पर्यायों में एक ही प्रत्यय लगाकर पुन: नये पर्याय निर्मित कर उन्हें कोश में संगृहीत किया करते थे। इस प्रसंग में डॉ. हरदेव बाहरी का यह मत तर्कसम्मत है— 'हिंदी शब्दों की संख्या *प्रकाशनाममाला* और *नामप्रकाश* में भरपूर है। *उमराव कोश* में इनकी संख्या सबसे अधिक है। आवश्यकतानुसार इसमें अरबी-फ़ारसी के शब्द भी मिल जाते हैं। डिंगल कोशों में विशेष रूप से बहुत से स्थानीय शब्द हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इन शब्दावलियों की अपनी सीमा है। इस तरह से 40-45 समानार्थी कोश, 15-20 अनेकार्थी कोश, 45 एकाक्षरी कोश तथा 6-7 डिंगल कोश प्राप्त हैं। सबसे छोटे कोश में 28 और सबसे बड़े में 2800 शब्द हैं।'[14]

कुछ पर्याय कोशों में इस प्रकार से अनावश्यक शब्द निर्माण की प्रवृत्ति नहीं मिलती है। उनमें मूल शब्द दे कर उस आधार पर बने अन्य शब्दों का अलग से उल्लेख न कर मात्र उदाहरण दे दिये गये हैं और नियमों का विस्तार से उल्लेख किया गया है। संस्कृत कोश *धनंजय नाममाला,* हिंदी *डिंगलनाममाला, उमरावकोश, धनजीनाममाला,* और *कर्णाभरण* आदि में यह पद्धति दिखती है। जैसे— 1. घोड़े के पर्यायवाची नामों के आगे मुखवाची पर्याय जोड़ने से 'किन्नर' शब्द के पर्याय बन जाते हैं। 2. 'कमल' के नामों को 'सारस' का भी पर्याय मानना चाहिए।[15]

कर्णाभरण में यही बातें पहले गद्य में बताई गयीं फिर स्पष्ट करने के लिए उदाहरण दिये गये हैं। जैसे— '... पाँच नाम दिन के। इनके आगे 'मनि', 'कर' लगाये सूर्ज को नाम यथा वासरमनि, वासरकर।'[16] *धनजीनाममाला* में भी इसी पद्धति का प्रयोग हुआ है।

(iii) अन्य देशी/विदेशी भाषाओं के शब्दों का संग्रह

प्राय: कोशकारों ने शब्द संकलन के लिए संस्कृत कोशों के साथ ही अन्य उपलब्ध कोशों की सहायता भी ली है। तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिवेश का भी उन पर प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप अनेक प्रांतीय भाषाओं के शब्द, देशज शब्द और मुगल प्रभाव से अरबी, फ़ारसी, उर्दू के शब्दों के साथ ही तुर्क, डच, पुर्तगीज़, फ्रेंच और बाद में अंग्रेज़ी भाषा के भी कुछ शब्द नाममालाओं में संगृहीत हुए। इनमें जहाँ नंददास की नाममाला में देशज शब्द, जैसे— वीर, रुसि, विरिया, चोरा आदि संकलित हुए वहीं भिखारीदास और उदैराम ने गाँवों में और जनजीवन में प्रचलित पर्यायों को संकलित किया।

नाममालाओं में संकलित प्रांतीय भाषाओं के शब्दों में अधिकांशत: ब्रज और अवधी के शब्द हैं, मसलन—

हमरे सुंदर स्याम प्रेम को मारग सूधो
रावरे बेनी माहि, अस दीनी इह आटी—

नाममाला— नंददास

(ग) संकलित शब्दों का वर्ग विभाजन

नाममाला कोशों में संकलित शब्द समूह का अध्ययन करने के लिए उनका तीन दिशाओं पर आधारित विभाजन आवश्यक है— भाषा संबंधी आधार, व्याकरणिक आधार और अर्थ संबंधी आधार।

(i) भाषा संबंधी आधार

संकलित शब्दों को भाषा के आधार पर वर्गीकृत करने से उन शब्दों का स्रोत और भाषा-साहित्य में उनका सही मूल्य निश्चित किया जा सकता है। समस्त शब्द राशि के दो उपभेद सम्भव है—

---

[14] हरदेव बाहरी, *हिंदी के एक भाषीय कोश,* हलवानिया स्मृति ग्रंथ : 4.

[15] सुवंश शुक्ल (1805), *उमराव कोश* (हस्तलिखित) में है 'ज्यतने कहत कमल के नाम, त्यतने सारस के बुधि धाम'. उमरावकोश, 2/5/23.

[16] हरिचरणदास (1781), *कर्णाभरण,* (हस्तलिखित) : 11.

णमभयंश्रेयोभद्रंचमंगलं ९९ भावुकंभविकंभव्यंकुशलं
क्षेममस्त्रियां वक्तावाचस्पतिर्यत्रश्रोताशक्रस्तथापिनो १००
शब्दपारायणस्यांतंनगतोतत्रकेवयं तथापिकिंचित्कस्मैचि
त्प्रतिबोधायसूचितं १ बोधयेत्कियदज्ञिज्ञंमार्गज्ञःसह
यातिकिं प्रमाणमकलंकस्यपूज्यपादस्यलक्षणं २ द्विः
संधानंकवेःकाव्यंरत्नत्रयमपश्चिमं कवेर्धनंजयस्येयंसत

धनंजय निघण्टु : प्रथम पृष्ठ / पांडुलिपि

स्वदेशी भाषा के शब्द, और विदेशी भाषा के शब्द। स्वदेशी भाषा के शब्दों में अ— संस्कृत की तत्सम शब्दावली तथा ब— तद्भव, स्थानिक या प्रांतीय शब्दावली दोनों पायी जाती है। इसी प्रकार विदेशी भाषा के शब्दों में अरबी, फ़ारसी, तुर्की, ग्रीक, लैटिन, फ्रेंच, इंगलिश, उज़बेगी, चीनी आदि शब्दावली (जो अरबी-फ़ारसी के माध्यम से हिंदी में आयी) आ जाती है।

(अ) संस्कृत के तत्सम शब्द

संस्कृत कोशों से प्रभावित होने के कारण लगभग सभी कोशों, विशेषकर *प्रकाशनाममाला, नामप्रकाश, उमरावकोश* आदि में संस्कृत के तत्सम शब्द बहुलता से संगृहीत हैं। ऐसे कुछ शब्द हैं— अंगदकर [17], अस्मर [18], इध्मा [19], उपराग [20], कौणप [21], मृत्सा [22], श्रुक [23], हार्दि [24] आदि।

(ब) तद्भव या भाषा के शब्द

आलोच्य कोशों में संख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान तद्भव शब्दों का है जिन्हें भिखारीदास, हरिचरणदास तथा मियाँ नूर ने 'भाषा' शब्द का नाम दिया है।[25] प्राप्त नाममालाओं में नंददास, चंदनराम, उदैराम, विनयसागर उपाध्याय के अनेकार्थी कोश और वीरभाण, फ़क़ीरचंद, उदैराम द्वारा रचित एकाक्षरी नाममालाओं को छोड़ कर समस्त कोशों में 'भाषा' के शब्द संकलित हैं। संकलित कुछ तद्भव शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं— अंध्यारों [26], अंगेठी [27], गूलरि [28], गोंका [29], जलकिनका [30], झांवी [31], वीवाह [32], आदि।

---

[17] *नामप्रकाश,* वही : 11.
[18] वही : 6.
[19] *उमरावकोश,* वही : 2 /3 /21.
[20] मियां नूर (1697), *प्रकाशनाममाला,* आगरा विश्वविद्यालय, आगरा : 284.
[21] *उमरावकोश,* वही : 1/2 /3 .
[22] *नामप्रकाश,* वही : 68.
[23] *प्रकाशनाममाला,* वही : 270.
[24] *नामप्रकाश,* वही : 50.
[25] *नामप्रकाश,* वही : 13; 'ये बीस संस्कृत में बिचारि, बैहरि बैयारि भाषा निवाह'.
[26] *नामप्रकाश,* वही : 53 .
[27] वही : 226.
[28] *उमरावकोश,* वही : 2 /4 /34.
[29] *नामप्रकाश,* वही : 83.
[30] *नामप्रकाश,* वही : 18.
[31] *कर्णाभरण,* वही : 44.
[32] बद्रीदास (1668), *मानमंजरी,* (हस्तलिखित) : 148, अचलानंद जखमौल (1961).

(स) स्थानिक, देशज और प्रांतीय शब्द

इन शब्दों के विषय में स्पष्ट रूप से कुछ भी कहना सम्भव नहीं है। कुछ शब्द तद्भव शब्दों में ही उल्लिखित हो चुके हैं। हरिचरणदास ने अपने कोशग्रन्थ *कर्णाभरण* में स्थान विशेष का नाम न देते हुए 'पूरब' और 'इहाँ' शब्दों का स्थान-स्थान पर उल्लेख किया है। जैसे— 'नीलकमल के लिए कमल, कोका, कुमुद के लिए पूर्व में 'कोई' तथा इनके प्रकोष्ठ में स्थित पदार्थ को 'रूकी'[33] कहते हैं। ढेलवांस को इहाँ (राजस्थान में) 'गोफन' कहते हैं[34] आदि। हरिचरणदास की जीवनी को देखते हुए 'पूरब' बिहार से तथा 'इहाँ' राजस्थान से संबंधित है।

(द) विदेशी शब्द

इनमें फ़ारसी व अरबी शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। इन्हें कोशकारों ने हिंदी का शब्द मानने के बाद ही संकलित किया। तीनों नाममालाओं (नंददास की *नाममाला,* बद्रीदास की *मानमंजरी* और *नाममाला* 'ख'), *धनजीनाममाला, विश्वनाममाला,* अनेकार्थी एवं एकाक्षरी कोशों को छोड़कर अन्य पर्याय कोशों में हिंदी शब्दों के साथ फ़ारसी या अरबी के शब्द भी छंद में हैं। केवल ग़रीबदास ने अपने *अनभैप्रबोध* में 'परमेश्वर जी के तुरकी नाम' स्वतंत्र रूप से एक स्थान पर छंदबद्ध किये हैं। अन्य कोशों में ऐसे नाम हिंदी शब्दों के साथ प्रासंगिक रूप में ही आये हैं। जैसे—

फ़ारसी— कारख़ाना (कारखानः)[35], खुसियाली (ख़ुशहाल)[36], जहान (ज़हाँ)[37], दरवाजः (दरवाज़)[38] आदि।

अरबी— खबरि (ख़बर)[39], ज्वाब (जवाब)[40], जहाज़[41], तमाशा[42], आदि।

यह सभी शब्द अत्यंत सामान्य हैं जो हिंदी के ही लगते हैं। उस समय के साहित्य में भी इनका प्रयोग मिल सकता है।

अन्य भाषीय विदेशी शब्द

ये शब्द अरबी, फ़ारसी के माध्यम से कोशों में आये। लेकिन इस अध्ययन में इन शब्दों पर विचार नहीं किया जा रहा। *नामप्रकाश* में केवल एक अंग्रेज़ी शब्द 'बंगला' राजप्रासाद के पर्याय के रूप में आया है।

(ii) व्याकरणिक आधार

निरुक्तकार यास्क ने संस्कृत शब्दों को चार विभागों में विभक्त किया था : नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात। पाणिनि ने निपात, उपसर्ग दोनों को एक वर्ग में रखकर 'अव्यय' नाम दिया। आधुनिक हिंदी व्याकरण में कामताप्रसाद गुरु ने आठ प्रकार के पद-विभाग माने हैं— जो अंग्रेज़ी व्याकरण के अनुसार हैं— संज्ञा, सर्वनाम विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, संबंधसूचक, समुच्चयबोधक और विस्मयादि बोधक।[43]

---

[33] *कर्णाभरण,* वही : 20.
[34] वही : 39.
[35] *नामप्रकाश,* वही : 75.
[36] वही : 50.
[37] वही : 69.
[38] *उमरावकोश,* वही : 2/2/22.
[39] *नामप्रकाश,* वही : 37.
[40] वही : 38.
[41] *प्रकाशनाममाला,* वही.
[42] *नामप्रकाश,* वही.
[43] कामता प्रसाद गुरु (1978), *हिंदी व्याकरण,* नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी : 68-76.

(अ) नाम एवं आख्यात : नाम और आख्यात प्रधान पद हैं जो उपसर्ग एवं निपात के बिना भी अपना अर्थ प्रकट कर सकते हैं। उपसर्ग और निपात गौण हैं एवं उनका स्वतंत्र अर्थ नहीं है। नाम एवं आख्यातों में भी नाम शब्दों की प्रधानता है। आख्यात का प्रयोग नाम के ही अधीन होता है। साथ ही नाम शब्दों के प्रयोग की अधिकता और विविधता, आख्यातों या क्रियापदों से अधिक है। नाममाला कोशों को कोश नाम न देकर *नाममाला* नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इनमें नामों (संज्ञाओं) को माला के मनकों के रूपों में गूँथा गया है।[44] एक नाम (शब्द) के कितने अन्य प्रचलित पर्याय हैं इसी को प्रदर्शित करना इन नामकोशों का उद्देश्य था। अनेकार्थी कोशों में भी एक शब्द के भिन्न-भिन्न संज्ञा अर्थ हो सकते हैं। इन कोशों में केवल संज्ञाओं को ही संकलित करने का एक दूसरा मुख्य कारण यह भी है कि प्राय: समस्त कोश छंदों में रचे गये हैं (अपवादस्वरूप कर्णाभरण जैसे कोश गद्य में भी रचे गये) जिसके फलस्वरूप भाषा में प्रचलित सभी प्रकार के शब्द इनमें संकलित करना रचना की दृष्टि से भी सम्भव न था। इसलिए अत्यंत आवश्यक और प्रचलित क्रियाओं के भी भाववाचक संज्ञा रूप बनाकर ही पर्याय दिये गये हैं।

(ब) प्रचलित नामशब्दों का ही संकलन : नाम संज्ञाओं में भी प्रत्येक नाम के पर्याय नहीं गिनाये गये। प्रत्येक क्षेत्र से कुछ विशेष शब्दों को ही प्राय: हर कोश में स्थान मिला है, हालाँकि उनके स्रोत भिन्न-भिन्न हैं। जैसे, देवताओं, पौराणिक महापुरुषों, धार्मिक महत्त्व के प्राकृतिक उपकरणों, वनस्पतियों तथा पशु-पक्षियों के पर्याय अधिकतर कोशकारों ने संकलित किये। जिनमें अग्नि, चंद्र, सूर्य, आकाश, महादेव, वानर, घोड़ा, हाथी, देव, सर्प, चंदन, पर्वत, धरती, मेघ, वृक्ष, समुद्र, सेना, कमल, तीर, पवन, भ्रमर, राजा, सिंह, गंगा, पार्वती, कामदेव, माता, मोर, आँख, ब्रह्मा, युद्ध, लक्ष्मी, वन, हंस, इंद्र, कृष्ण, तलवार, नदी, पिता जैसे अनेक शब्द लगभग सभी कोशों में संकलित हुए हैं।

(स) विशेषण : नाम संकलन के बाद शब्द संख्या की दृष्टि से विशेषण शब्दों का क्रम है। चारों वर्गात्मक कोशों के तृतीय काण्ड के अंतर्गत एक भिन्न वर्ग 'विशेष्यनिघ्नवर्ग' के नाम से है। इसमें केवल विशेषण के पर्याय श्लोक रूप में हैं। लेकिन इन विशेषणों से कोशकारों का उद्देश्य विशेषणयुक्त नामों (संज्ञाओं) से था।

(द) क्रियाएँ : अनेकार्थी, एकाक्षरी, अनभैप्रबोध, नाममाला 'ग', डिंगलनाममाला, नागराज डिंगलकोश के अतिरिक्त शेष समानार्थी कोशों में क्रियाओं को नाम संज्ञा के समान ही समझ कर उनको भाववाचक संज्ञा रूपों में संकलित किया गया है।

(य) सर्वनाम : यह नाममाला कोशों में प्राप्त नहीं है।

(र) अव्यय : विवेच्य कोशों में से उदैराम, मियाँ नूर, फ़क़ीरचंद के कोशों में द्वादश (22) वर्ण एकाक्षरों के अनेकार्थ के पश्चात् एकाक्षर अव्ययों का भी विवेचन हुआ है। *लखपतमंजरी* नाममाला में केवल अव्यय एकाक्षरों को ही संकलित किया गया है। समानार्थी एवं अनेकार्थी कोशों में कोई अव्यय शब्द नहीं है।

(ल) लिंग मात्र का संकेत : अमरकोशकार ने अपने कोश का नाम *नामलिंगानुशासन* रखा था, अर्थात् नाम एवं लिंगों का अनुशासन, निर्देशन, या कथन। लेकिन अन्य नाम मालाकोशों में (अपवाद, *अनेकार्थ* : चंदनराम) इस तरह के कोई संकेत प्राप्त नहीं होते।

---

[44] नंददास (1568), *नाममाला,* प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग (प्रकाशन वर्ष 1942) : पंक्ति 5; गूँथनि माला नाम की अमरकोश के भाय.

(iii) अर्थ संबंधी आधार

सामान्यत: कोश शब्द और अर्थ के संबंध और उनके प्रयोग के अनुसार हुए अर्थ परिवर्तन को भी लक्षित करते हैं। कई विद्वान वैसे कोश को मात्र 'शाब्दिकी' सिद्ध कर अर्थ की दृष्टि से नगण्य घोषित करते हैं लेकिन जैसा कि व्याडि ने कहा वेद और समाज में शब्द और अर्थ का संबंध निश्चित करने वाला कोई व्यक्ति हो ही नहीं सकता, क्योंकि यह संबंध शाश्वत है, अत: शब्द के साथ अर्थ सदा ही रहता है। नाममाला कोशों में संकलित शब्दों के लिए कोशकारों द्वारा अनेक अर्थाधारों का उल्लेख ही प्रस्तुत उपशीर्षक में विवेच्य है। ये संक्षेप में इस प्रकार है—

1. पिता के नाम पर अन्वित शब्द : अंजनीसुत[45], शिवतनय[46], आदि।
2. माता के नाम पर अन्वित शब्द : उमानन्दन[47], गिरजानन्द[48], राधासुत[49]।
3. पति के नाम पर अन्वित शब्द : विष्णुप्रिया[50]
4. पत्नी के नाम पर अन्वित नाम शब्द : रतिपति[51], श्रीपति[52] आदि।

इनके अतिरिक्त कर्म के आधार पर, रूप या आकार के आधार पर, देश के, रात्रि या नक्षत्र के, गोत्र या वंश के आधार पर और अनेक ऐसे ही आधारों पर अन्वित शब्द विभिन्न नाममालाओं में मिलते हैं। ये सभी शब्द परम्परा से सुने हुए धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों से ही सम्बद्ध हैं। किसी-किसी कोश में समाज, उस समय की शासन-व्यवस्था और आश्रम या वर्ण-व्यवस्था से संबंधित शब्दावली भी पर्याय कोशों की दृष्टि सीमित होने के कारण इनमें दिखती है। इनमें अधिकतर ऐसे शब्द ही आये हैं जिनके समानार्थी अधिक होते हैं। वैद्यक निघण्टुओं के प्रभावस्वरूप कुछ वनस्पति वर्ग के भी शब्द हैं, पर उनका महत्त्व भी एकदेशीय है। लेकिन शब्दकोशों में काव्य-साहित्य के अलावा राजनीति, विज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य आदि विषयों से सम्बद्ध शब्दावली का संकलन नहीं हुआ है। यह इनकी सबसे बड़ी कमी है।

(अ) शब्दों के रूप

कोश कार्य में संकलन के लिए शब्द-चयन के साथ ही शब्दों के शुद्ध, व्याकरण समस्त और परिनिष्ठित रूपों को भी देना होता है। इन कोशों में शब्दों के जो रूप भेद बताये गये हैं वे केवल आंशिक प्रयास मात्र हैं।[53] शब्दों के रूप से सम्बद्ध सामान्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(क) सभी कोशकार भाषा (हिंदी) के शब्द लिख रहे थे, अत: भाषा की प्रवृत्ति के अनुसार उन्होंने ध्वनियों को परिवर्तित कर लिया। संस्कृत शब्दों को स्थान-स्थान पर हिंदी शब्दों का रूप दे दिया लेकिन इस प्रक्रिया में एक ही शब्द की कई वर्तनियाँ प्राप्त होती हैं।

1. कृष्ण, कृष्न, कृश्न, क्रसन, क्रसण, किसन।
2. गुरुड़, गरड़, गरुड़, गरुण, गरुड, गरुर।

(ख) संस्कृत शब्दों का 'य' हिंदी में 'ज' हो गया है। इसी तरह संस्कृत शब्दों में आये 'ण' को

[45] *प्रकाशनाममाला,* वही : 327.
[46] *प्रकाशनाममाला,* वही : 268.
[47] *उमरावकोश,* वही : 1/2/26.
[48] मानमंजरी, वही : छंद 100.
[49] *प्रकाशनाममाला,* वही : 328.
[50] वही : 267.
[51] *मानमंजरी,* वही : छंद 86.
[52] *कर्णाभरण,* वही : 2.
[53] वही.

वृत्तरत्नाकर : षष्ठ अध्याय / पांडुलिपि

हिंदी में 'न' कर दिया गया है। परन्तु डिंगल कोशों में इसके विपरीत हुआ है। वहाँ सभी 'न' वाले शब्द 'ण' ही लिखे गये। 'ब', 'व' का कोई भेद नहीं रहा है।

(ग) इन तीनों शब्दों के अतिरिक्त निम्नांकित ध्वनि वर्ग भी एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त हुए हैं— ल र, ड र, य ज्ञ, श स, क्ष छ, भ व, म ब, भ ब, ग घ, त थ, ष क, य इ, ये ए, अ य, ष ख क ज आदि।

(घ) रेफ़ का अधिकांश स्थलों पर स्वरांत 'र' के रूप में प्रयोग हुआ है।

(ङ) डिंगल के समस्त कोशों में अनुनासिक वर्ण के पहले आने वाले वर्ण पर अनुस्वार लगा दिया गया है यथा : तिलतांम, दांणव, कांननभखी आदि।

(च) स्वरों के प्रयोग में प्राय: सभी कोशकारों ने स्वरुचि को प्राथमिकता दी। जिससे स्वर विपर्यय, स्वरागम, स्वरलोप विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त भिन्नता दिखती है।

(ब) शब्द रूपों में विकृति के कारण

समस्त कोशों में तत्कालीन काव्य-साहित्य, जनभाषा और सामान्य दिन-प्रतिदिन की बोली में आये शब्दों को ही संकलित किया गया है। रूप संबंधी जितने भी विकार आये, उनको कोशकारों ने अपनी इच्छा से नहीं गढ़ा है।

शब्दों के रूप से संबंधित विकृतियों के तीन कारण माने जा सकते हैं।

1) एक ही शब्द के अनेक स्थानिक या प्रांतिक रूप की उपलब्धता

2) छंद में निर्मित कोशों में तुकपूर्ति के आग्रहवश शब्दों के रूप में परिवर्तन कर देना।

3) उस समय हिंदी शब्दों के मानक रूप का प्रचलन न होना।

(स) शब्दों के वैकल्पिक रूपों का कोश में स्थान

संस्कृत के एकाधिक कोशों (जैसे, तारपाल का कोश, *शब्दार्णव, संसारावर्त* आदि) और हिंदी के कुछ समानार्थी कोशों (जैसे, *नाममाला*) के अतिरिक्त नाममालाओं में शब्दों के कई रूप देने की प्रवृत्ति नहीं पायी गयी।

(2) शब्दार्थ-संयोजन

नाममाला संकलन काल में निर्मित अधिकांश कोश संस्कृत-कोशों की परम्परा में और उनके आधार पर रचित हैं। इनका मूलभूत लक्षण केवल शब्द-संग्रह ही रहा है। उद्देश्य की विविधता एवं कोशकार की क्षमता में भिन्नता के कारण कोशों की उपयोगिता और महत्त्व में भी अंतर है। आधुनिक कसौटी के अनुसार किसी कोश की उपादेयता का पहला और आधारभूत लक्षण है उसमें संकलित शब्दों में से इच्छित शब्द की सरलता से प्राप्ति। शब्द और उनके अर्थ समय और परिवेश के अनुसार तो बदलते रहते हैं, परंतु यह प्रक्रिया बहुत धीमी है। इसी कारण कोशकारों के लिए शब्द, अर्थ और

उनसे संबंधित अन्य विषयों को प्रस्तुत करने की विशिष्ट शैलियाँ या पद्धतियाँ ही उनकी योग्यता की मानक हैं। ऐसे में शब्द-चयन और उनकी संग्रह-प्रक्रिया तो महत्त्वपूर्ण है ही पर कोश का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष है शब्द-संयोजन की शैली। विभिन्न नाम-मालाओं में शब्द-संकलन (संयोजन) की अनेक प्रक्रियाओं के आधार पर उनके तीन भेद सम्भव हैं।

क. पर्याय शैली में शब्द-संकलित कोश
ख. अनेकार्थ पद्धति पर नियोजित कोश, और
ग. अक्षर अनुक्रम में शब्द-संकलित कोश

(क) पर्याय शैली में शब्द-संकलित कोश

सभी समानार्थी कोश (अनुवादित, डिंगल, सामान्य पर्याय कोश तथा नाममालाएँ) पर्याय शैली में व्यवस्थित हैं। 'पर्याय अर्थात् एक ही क्रम में आये हुए विभिन्न वस्तुओं के एक समूह को, वस्तुओं के विशिष्ट गुणों के आधार पर अलग-अलग वर्गों में बाँटने की प्रक्रिया। इसलिए 'अश्व और तुरंग' दोनों का तात्त्विक अर्थ जानते हुए उन्हें एक-दूसरे के स्थान पर और 'घोड़ा' के स्थान पर भी हमेशा प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।' इस विधा का प्रारम्भ *निघण्टु* से हुआ। स्वयं अमर सिंह ने 'पर्याय, आनुपूर्वी, आवृत, परिपाटी, अनुक्रम' को एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया है। किसी भी शब्द का पर्याय उसी भाषा में सम्भव नहीं है, क्योंकि कोई भी दो शब्द तात्त्विक दृष्टि से एक ही अर्थ नहीं बताते, जैसे, 'घोड़ा' पशु के लिए अश्व और तुरंग दोनों ही शब्दों का प्रयोग होता है, लेकिन जहाँ अश्व उसके बलशाली होने का बोध कराता है वही तुरंग उसकी तेज चाल का।

यदि इन कोशों को समानार्थी या पर्यायवाची कहा जाता है तो इसलिए कि इनमें एक ही भाषा के कुछ समान अर्थ से लगने वाले शब्दों को एक साथ रखा गया है। एक स्थान पर संगृहीत ऐसे शब्दों का प्राय: 'एक सा सामान्य भाव' होता है।[54] उनमें कुछ 'साधारणता' और साथ ही बहुत कुछ 'असाधारणता या विशिष्टता' का होना भी ज़रूरी है।[55]

शब्द-संयोजन

नाममाला कोशों के, शब्द-संयोजन की दृष्टि से पुन: तीन भेद सम्भव हैं।

(i) वर्गात्मक संकलन

यह सबसे प्राचीन, सरलतम और वैज्ञानिक विधि है, जिसमें प्रत्येक जातिवाचक संज्ञा-बोधक शब्द एक विशिष्ट वर्ग की प्रत्येक वस्तु के लिए प्रयुक्त हो सकता है। जैसे पुस्तक कहने से पुस्तक, पोथी, ग्रंथ या किताब, बुक जिल्द, वॉल्यूम ही समझा जाता है और ये सभी शब्द परस्पर एक दूसरे के विषय में बताते हुए एक ही वस्तु की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार समान भाव या विचारों के शब्दों को एक साथ रखकर उनके आंतरिक भाव को प्रकट करने की पद्धति ही *अमरकोश* में प्रयुक्त हुई है।[56] (रॉजेट ने पूर्णत: इसी पद्धति का प्रयोग अपने थिसॉरस में किया।)

---

[54] जे. एच. मरे (1909), *ए न्यू इंग्लिश डिक्शनरी, ऑन हिस्टॉरिकल प्रिंसिपल्स,* खण्ड 9 : भाग, 2, लंदन : 384-385 में मरे ने लिखा 'strictly a word having the same sense as another ...different context.'

[55] हरदेव बाहरी (1905), *Hindi semantics,* मानसधाम, नयी दिल्ली : 120 में यह लिखा है कि '... words of like significance in the main, but also with a certain unlikeness as well with very much common but also with somewhat private and pecular.'

[56] यास्का प्रणींत *निरुक्तम्* – वही : 19.

अमरसिंह ने अपने कोश में नाम और लिंगों को वर्गीकृत करके[57] बाद के कोशकारों के सामने एक नयी शैली प्रस्तुत की जिसे चारों उपलब्ध अनूदित कोशों *प्रकाशनाममाला, नामप्रकाश, कर्णाभरण* एवं *उमरावकोश* ने अपनाया।

प्रकाशनाममाला (मियाँ नूर) : इसमें काण्ड और वर्ग व्यवस्था *अमरकोश* पर आधारित है। हालाँकि मियाँ नूर ने एक स्थान पर कहा है : *अमरकोश* में तीन काण्ड और *प्रकाशनाममाला* में तीन प्रकाश[58] हैं। परंतु अनेकार्थ विवरण के अंत में चतुर्थ प्रकाश और एकाक्षर शब्दों का अर्थ पंचम प्रकाश में देने का भी उल्लेख मिलता है। सम्भवत: बाद के यह दो प्रकाश अमरसिंह से प्रभावित न होने के कारण *अमरकोश* के संदर्भ में 'याकेतीन प्रकासु' बताना अनुचित नहीं है।

प्रथम और द्वितीय प्रकाश में क्रमश: दस-दस वर्ग हैं : स्वर्ग, व्योम, दिक्, काल, धी, शब्दादि, नाट्य, पाताल, नर्क तथा वारि, द्वितीय प्रकाश में भूमि, पुर, शैल, अरण्य, सिंहादि, मनुष्य, ब्रह्म, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और तृतीय प्रकाश में केवल दो वर्ग विशेष्यनिघ्न व संकीर्ण हैं।

***नामप्रकाश* (भिखारीदास) :** यह कोश वर्ग विभाजन में पूरी तरह *अमरकोश* पर आधारित है। समस्त कोश तीन काण्डों में बँटा हुआ है। प्रथम, द्वितीय काण्ड में 10-10 एवं तृतीय काण्ड में तीन वर्ग हैं।

प्रथम काण्ड - स्वर्ग, व्योम, दिक्, काल, बुद्धि, शब्दादि, नाट्य, पाताल, नरक, वारि।

द्वितीय काण्ड - भूमि, पुर, शैल, वनौषधि, सिंहादि, नृ, ब्रह्म, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

तृतीय काण्ड - विशेष्यनिघ्न, संकीर्न (र्ण), अनेकार्थ।

***कर्णाभरण* (हरिचरण दास) :** यह समानार्थी कोश भी तीन काण्डों और अनेक वर्गों में विभक्त है। प्रथम का शीर्षक 'स्वरादि काण्ड' (दस वर्ग - स्वर्ग, व्योम, दिक्, काल, धी, शब्दादि, नाट्य, पाताल, नर्क, वारि) रखा गया है। द्वितीय काण्ड को 'भूम्यादिक काण्ड' (दस वर्ग— भूमि, पुर, शैल, वनौषधि, सिंहादि, मनुष्य, बह्म, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) नाम दिया। तृतीय काण्ड में केवल दो वर्ग विशेष्यनिघ्न तथा संकीर्ण हैं।

***उमरावकोश* (सुवंश शुक्ल) :** कोशकार के अनुसार इसमें तीनों लोकों के शब्द संकलित हैं अत: कुल तीन काण्ड हैं।[59] इसकी काण्ड और वर्ग व्यवस्था उपर्युक्त पद्धति पर ही है। प्रथम काण्ड में केवल 9 वर्ग (वंश, स्वर्ग, दिक्, काल, धी, ब्राह्मी, नाट्य, पाताल, वारि), द्वितीय काण्ड में दस वर्ग (पृथ्वी, पुर, शैल, वनौषधि, सिंह, मनुष्य, ब्रह्म, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) तथा तृतीय काण्ड में केवल विशेष्यनिघ्न वर्ग एवं अनेकार्थ वर्ग ही है। इन चारों कोशों की काण्ड एवं वर्ग व्यवस्था कुछ अपवादों को छोड़कर पूर्णत: संस्कृत के अमरकोश के अनुसार है। अधिक *स्पष्टता* के लिए उनका *अमरकोश* के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।[60]

इसी प्रकार द्वितीय काण्ड और तृतीय काण्डों की भी तुलनात्मक विवेचना की जा सकती है। चतुर्थ प्रकाश और पंचम् प्रकाश केवल प्रकाशनाममाला में है।

---

[57] अमरसिंह (छठी शती), *अमरकोश,* रामस्वरूप, शिवबुक्स इंटरनेशनल, नयी दिल्ली : 145; 'सम्पूर्ण मुच्यतेवर्गेन मिलिंगानुशासनम्'— *अमरकोश* 1/1/2.

[58] *प्रकाशनाममाला,* वही : 372 ; 'तीन काण्ड हैं अमर के याके तीन प्रकासु। कोस उहै माला यहै नूर प्रकट कर जासु'.

[59] *उमरावकोश,* वही : 1/1/32 'नाम कहयौ त्रैलोक्य के करि के बुद्धि नवीनि. या ही ते या ग्रंथ में काण्ड लसत हैं तीनि'.

[60] अचलानंद जखमौला, वही : 209.

पर्याय संख्या की गणना

प्रकाशनाममाला के अलावा इन तीनों कोशों की एक अन्य विशेषता शब्दों के पर्याय गिन कर अंत में कुल संख्या देने की भी रही है। चूँकि *अमरकोश* के संदर्भ में उसके टीकाकारों भानुजी दीक्षित, क्षीर-स्वामी, महेश्वर, रायमुकुट आदि को शब्दों को उसके सही पर्याय निश्चित करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ा था, इसलिए इन टीकाकारों ने पर्यायों की कुल संख्या देना शुरू किया जिससे किसी भ्रम या दुविधा की स्थिति न रहे।[61] लेकिन यह व्यवस्था भी पूर्णत: दोषरहित नहीं थी। पर्याय के अतिरिक्त आये शब्द वास्तव में पर्याय हैं या नहीं, सामान्य पाठक इसकी पहचान कैसे करे, अत: हरिचरणदास ने अपने कोश ग्रंथ *कर्णाभरण* में पर्यायों की गणना के लिए प्रत्येक समानार्थी शब्द के आगे क्रम से संख्याएँ अंकित कीं, जो शब्द पर्याय नहीं है उनके आगे संख्या नहीं है। जैसे, 'कृष्ण, 1 विष्णु, 2 वैकुण्ठ, 3 भजौ केसव, 4 नारायन, 5 ऋषिकेश, 6 दैत्यादि, 7 स्वभू, 8 दामोदर, 9 गरुड़ध्वज, 10 गोविन्द, 11 पुंडरीकाक्ष, 12 सु माधव, 13 पीताम्बर, 14 अच्युत, 15 उपेन्द्र, 16 सांर्गी, 17 सुनि सत्य, 18 व पुनि चक्रपाणि, 19 इन्द्रावरज, 20 वासुदेव, 21 रु सुनि हरि, 22 पुरुषोत्तम, 23 श्रीपति, 24 रु सौरि, 25 जनार्दन, 26 हिए धरु।'[62] *कर्णाभरण* में ही कहीं-कहीं पर्यायों के आगे क्रमांक देने के पूर्व कुल पर्याय गिनकर बता दिये गये हैं, जैसे—

॥ अथ तरकस के पाँच नाम ॥

'तुनीर 1 तून 2 सु निषंग 3 कहि उपासंग 4 जानो इषुधि 5'[63]

भाषा के दोनों रूपों (गद्य एवं पद्य) का प्रयोग

इन चारों कोशों में से केवल *कर्णाभरण* में ही गद्य का अंश टीका के रूप में मिलता है। इसमें पर्याय संख्याओं का क्रम तथा शब्द से संबंधित सामान्य उक्तियाँ ही अधिक मात्रा में हैं, जिनके द्वारा मूल पद्यात्मक भाव को सरलता से बताने का प्रयास हुआ है। इसमें *अमरकोश* के अन्य टीकाकारों के मतों का भी उल्लेख है।

वर्गरहित पर्याय कोश

नाम पर्यायों को किसी वर्ग के अंतर्गत संकलित करना पूरी तरह से दोषरहित पद्धति नहीं हैं। इसलिए कुछ कोशकारों ने इनको वर्गों में बाँटना उचित नहीं समझा। *डिंगलनाममाला* (हरिजन), *अनभै प्रबोध* (गरीबदास), *नागराज* डिंगलकोश, *हमीरनाममाला* (हमीरदान रतनू), *विश्वनाममाला* (बालकराम), *आतमबोधनाममाला* (चेतनविजय), *धनजीनाममाला* (सागर) *अवधाननाममाला* (उदैराम), *नाममाला 'क'* एवं *नाममाला 'ग'* में पर्याय संकलन बिना किसी वर्ग या काण्ड के किया गया है।

इन कोशों में संकलित आधार शब्दों में तारतम्य ढूँढ़ने का प्रयास कहीं-कहीं सफल भी हो सकता है। जैसे, हमीरदानरतनू की *हमीरनाममाला* में पहले देवताओं के नामों के पर्याय हैं जिन्हें सामान्य रूप से 'स्वर्ग वर्ग' कहा जाता है। इसी प्रकार समुद्र, नदी, तरंग, गंगा, यमुना, यमुना में पैदा होने वाले 'सरप' सभी को वारि वर्ग में स्थान दिया जा सकता है। यह प्रणाली अधिकांश कोशों में है।

---

[61] भिखारीदास ने *नामप्रकाश*, वही : 2 के प्रारम्भ में ही इस शैली के संबंध में अपना मंतव्य प्रकट किया— 'एकै शब्द कि दोय त्रय, यह भ्रम उपजत देखि. नाम की संख्या धरी, लीजै सुमति सरेषि'.

[62] *कर्णाभरण* वही : 3.

[63] वही : 39.

बिना वर्ग का नाम दिये एक जाति विशेष के शब्द स्थान-स्थान पर एक के बाद दूसरे आये हैं। परंतु विशिष्ट क्रम न अपनाने के कारण अव्यवस्था प्राय: प्रत्येक कोश में है। कोश का शुरू से अंत तक अध्ययन करने के पश्चात् भी शब्द विशेष का स्थान (शुरू में है या बाद में) निश्चित करना कठिन है। उदैराम के *अवधाननाममाला* में 'घोड़ा' और 'शत्रु' के पर्याय के बीच में 'द्रौपदी' के पर्याय, 'नुपूर' तथा 'आरसी' के बीच 'पान-बीड़ा' के पर्याय 'संध्या' एवं 'गिनका' के बीच आये 'पपीहा' के पर्याय अक्रमता और भ्रम की स्थिति के कारण हैं।

नाममालाओं पर आधारित शब्द-संकलन

नंददास की *नाममाला,* बद्रीदास द्वारा रचित *मानमंजरी* और *नाममाला ख* में शब्द-संकलन एक विशिष्ट तरह से किया गया है। तीनों कोशों में गौण रूप से दोहे के द्वितीय चरण में राधिका के मान का प्रसंग भी दिया गया है।[64] दोहे के प्रथम चरण में पर्याय इस ढंग से गिनाये गये हैं कि कथा अप्रासंगिक न प्रतीत हो। नंददास *नाममाला* के प्राचीनतम होने से बाक़ी दोनों नाममालाकारों को उससे प्रेरणा मिली। *नाममाला ख* आरम्भ और अंत में अधूरी और त्रुटियुक्त है, साथ ही यह संकेत भी प्राप्त होते हैं कि यह नंददास नाममाला की ही कोई परिष्कृत कृति है। तीनों कोशों के प्रारम्भ में 'सखी' और 'शीघ्र' के पर्याय दिये हैं क्योंकि द्वितीय चरण में वृषभानु की 'कुंवरि' राधा की 'सखी'[65] नंदलाल की आतुरता देखने के कारण 'शीघ्रता' से राधिका तक पहुँचने का प्रयास करती है।[66] सखी वृषभानु के 'धाम' तक पहुँचती है इसलिए 'धाम' के पर्याय भी दिये गये। परंतु सखी को राधा के पास जाते हुए कोई देख न ले इसलिए उसने अपनी आँखों में लोपांजन मल लिया, अत: इसी माध्यम से 'अंजन' तकिया, केश, ललाट, नेत्र, दशन, ठोढ़ी, मुख, ग्रीवा, हाथ, उरोज आदि के शब्द तीनों कोशों में पर्यायबद्ध हैं। सखी द्वारा नायक की प्रशंसा व महत्त्व को बताने के लिए धर्मराज, कुबेर, वरुण, दुर्गा, गणेश आदि के पर्याय भी बताये गये। यह सभी देव नायक का वंदन करते हैं। दूती के अनुनय विनय के बाद नायिका ने कृष्ण के पास जाने का निश्चय किया। अंत में दोनों का मिलन हुआ और इसी मिलन के सहारे 'युगल' के पर्याय भी संकलित हैं। मान प्रसंग को निकाल देने के बाद नाममाला कोशों और वर्गहीन पर्याय कोशों की शब्द-संकलन पद्धति में अधिक अंतर नहीं है। समग्र रूप से वर्गरहित पर्याय कोशों के संबंध में कहा, नाममाला कोशों पर भी लागू होता है। तीनों नाममालाएँ, '*अमरकोश के भाय*' पर निर्मित होने के बाद भी विश्वनाममाला या आतमबोध नाममाला के अधिक निकट हैं।

निष्कर्ष

समानार्थी कोशों के तीनों प्रकारों का सम्पूर्ण अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि तीनों में भिन्नताओं की अपेक्षा समानताएँ कहीं अधिक हैं। नाममालाओं से यदि मान वर्णन पृथक् कर दें तो विशेषतानुसार यह वर्ग रहित पर्यायकोशों के समान हो जाएँगे। वर्गात्मक और वर्गहीन कोशों का एकमात्र अंतर वर्गों का विभाजन और उसके अनुसार नामकरण है, परंतु तीनों कोशों में शब्द-विशेष की यथास्थिति का ज्ञान कराने के लिए अनुक्रमणिका का होना आवश्यक है।[67] वैसे मानमालाओं में मानप्रसंग द्वारा शब्द की स्थिति कुछ हद तक पता चलती है पर वह अपर्याप्त है।

---

[64] नंददास, वही : पंक्ति 5-6 ; 'गूंथनि माला नामकी, अमरकोस के भाय. मानवती के मान पर, मिलें अर्थ सब आये'।

[65] 'बयसा सैरिंध्री, सखी, हितू सहचारी आहि. अली कुंवरि वृषभान की, चली मनावन ताहि. वही पंक्ति 9-10.

[66] वही : पंक्ति 15-16.

[67] एच.टी. कोलब्रुक (1808), *अमरकोश इन इंग्लिश,* सेरामपुर (बंगाल); सम्भवत : इसीलिए *अमरकोश* का अंग्रेज़ी अनुवाद करते हुए कोलब्रुक ने शब्दों की अकारादिक्रम से अनुक्रमणिका भी दी.

(ख) अनेकार्थी कोशों में शब्द-संयोजन

इस वर्ग में कोशों का अध्ययन करने से पहले अनेकार्थ और पर्याय के तात्त्विक भेद को समझ लेना आवश्यक है।

अनेकार्थ और पर्याय

'अनेकार्थ' तथा 'पर्याय' परस्पर मिलते हुए शब्द हैं। अभी तक दोनों प्रकारों में बहुत स्पष्ट सीमांकन नहीं हुआ है। पाश्चात्य विद्वान तो 'अनेकार्थ' जैसा कोई शब्द मानते ही नहीं हैं।[68] परंतु हिंदी एवं संस्कृत में इनके महत्त्व को विचारा और जाना गया। यदि ऐसा कहें कि अनेकार्थी और पर्याय दोनों ही संदर्भ के अनुसार प्रयुक्त होते हैं, तो उचित होगा। उदाहरण द्वारा दोनों को समझाया जा सकता है जैसे कृष्ण के पर्याय शब्द राधारमण और कंसनिकंदन दोनों ही हैं। परंतु रक्षा के संदर्भ में राधारमण का प्रयोग उचित नहीं है। वास्तव में पर्याय एक शब्द के कुछ 'मिलते जुलते अर्थ' वाले अनेक शब्दों को कहते हैं। परंतु अनेकार्थ में एक शब्द के 'परस्पर' भिन्न अर्थ वाले शब्दों का भाव होता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने 'घर शब्द' के पर्यायों द्वारा यह इस प्रकार स्पष्ट किया है—

1. धोबी का कुत्ता न 'घर' का न घाट का।
2. गाँव में सत्तर 'घर' हैं।
3. मकान में पाँच 'घर' हैं।
4. वह बड़े 'घर' का है।
5. उससे बुराई 'घर' कर गयी है।
6. वह झूठ का 'घर' है।
7. वह 'घर-घर' मारा-मारा फिरता है।
8. तुम्हारा 'घर' कहाँ हैं पाकिस्तान में या हिंदुस्तान में।

प्रत्येक वाक्य में प्रयुक्त 'घर' का अर्थ भिन्न है जबकि शब्द समान (घर) है। अनेकार्थक, शब्द भी हो सकते हैं, अक्षर भी पर अक्षरों के पर्याय नहीं होते। 'क' के स्थान पर 'ख' का प्रयोग असम्भव है। अनेकार्थ के संबंध में नाममाला कोशकारों का उद्देश्य स्पष्ट नहीं था। 'अनेकार्थ' को स्पष्ट करते हुए नंददास ने कहा एक शब्द के नाना अरथ होते हैं।[69] एक वस्तु के समय, स्थान, वक्ता, और प्रसंग के अनुसार अनेक नाम (अर्थ प्रयोग) हो जाते हैं। इसी प्रकार सुवंश शुक्ल, भिखारीदास, मियाँ नूर, उदैराम, चंदनराम सभी ने अपने-अपने शब्दों में 'अनेकार्थ' या 'नानार्थ' को समान रूप से स्पष्ट किया है।

इस आधार पर अनेकार्थी कोशों के दो मुख्य विभाग सम्भव हैं— 1. शब्दों के अनेक अर्थ देने वाले कोश, और 2. अक्षरों के अनेक अर्थ देने वाले कोश जैसे एकाक्षर, द्वयक्षर, त्रयक्षर, चतुर्थाक्षर आदि।

शब्दों के नानार्थ देने वाले कोश

शब्द-संयोजन की यह पद्धति पुनः तीन उपविभागों में विभक्त की जा सकती है—

---

[68] ज़े.वेंड्राइज़, वही : 177, 'When we say that one word may mean several things, we are in the sense the dupes of an illusion. Among the diverse meanings a word possesses, the only one that will emerge into consciousness is the one determined by the context, all the others are abolished, extinguished non existent...,

[69] नंददास (1568), अनेकार्थ, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग : पंक्ति 7-8 में स्पष्ट है, 'शब्द एक नाना अरथ, मोतिन कैसी दाम. जो नर करि है कण्ठ सो, द्वै है छवि को धाम'.

(अ) भिखारीदास के कोश *नामप्रकाश* के तृतीय काण्ड में संकलित अनेकार्थ वर्ग अंत्यवर्णानुसारी (अंतिम वर्ण के अनुसार) पद्धति पर नियोजित है। इसका अध्ययन अंत्यवर्णानुसारी पद्धति के अंतर्गत किया गया है।

(ब) विनयसागर के कोश अनेकार्थनाममाला एवं चंदनराम द्वारा रचित अनेकार्थ में— शब्द-संयोजन की अतिविशिष्ट शैली है। दोनों कोश तीन अधिकारों में विभक्त हैं। प्रथम अधिकार में संकलित शब्दों के अनेकार्थ पूरे दोहों में व्यक्त किये गये हैं— इसी शैली का प्रयोग 'अनेकार्थनाममाला' में भी हुआ है। परंतु यह कोश प्राचीन है, इसलिए चंदनराम के अनेकार्थ पर इसका प्रभाव अवश्य पड़ा होगा। फिर भी शब्दों की अकारादिक्रम से नियोजित अनुक्रमणिका के बिना ग्रंथ में शब्दों को ढूँढ़ निकालना, दोनों ही कोशों में कठिन है। नंददास कृत 'अनेकार्थ', प्रकाशनाममाला के अंतर्गत अनेकार्थ वर्ग, उमराव कोश में अनेकार्थ वर्ग, उदैराम रचित 'अनेकार्थी' और सागर के 'अनेकार्थी' कोशों का शब्द-संकलन किसी भी निश्चित पद्धति पर आधारित नहीं है। नंददास और उदैराम के कोशों का शब्द-संकलन कहीं-कहीं मिलता है परंतु अन्य कोशकारों ने अनेकार्थी शब्द अनुमान और कल्पना के आधार पर संकलित किये हैं। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि शब्द-विशेष के अर्थ कहाँ पर मिलेंगे।

(स) कोशकारों ने प्राय: जिस शब्द के अनेकार्थ दिये हैं, उस शब्द का उल्लेख शीर्षक में भी किया है, जैसे— रस नाम, हर शब्द नांव आदि फिर भी कोई दुविधा न रहे इसलिए चंदनराम ने यह नियम बताया कि छंद में जो शब्द दो बार आ जाए तो अनेकार्थ रचयिता वही अर्थ देना चाहता है।

उपर लिखित तथ्यों के अतिरिक्त कुछ और तथ्य भी इसे स्पष्ट कर सकते हैं— विनय सागर और चंदनराम के अनेकार्थी कोशों में मूल विवेच्य शब्द प्रत्येक अर्थ के साथ संयुक्त है परंतु अन्य कोशों में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं मिलती। साथ ही चंदनराम ने 'सारंग' शब्द के अंतर्गत आये अर्थों को आदि वर्ग के आधार पर एक साथ रखा है, 'प' से प्रारम्भ होने वाले शब्द एक स्थान पर तो 'त' से प्रारम्भ शब्द एक स्थान पर। यह शैली किसी और कोश में नहीं मिलती है।

अक्षरानुक्रम में शब्द-संकलित कोश

वर्गअनुक्रम पद्धति में जटिलता के कारण अक्षरानुक्रम पद्धति पर कोशकारों का ध्यान केंद्रित हुआ। यह पूर्णत: अवैज्ञानिक होते हुए भी सुविधाजनक होने के कारण ज़्यादा प्रचलित और ग्राह्य है।[70] अनेक विद्वानों के अनुसार कोश के लिए अक्षरानुक्रम पद्धति को ही विशेष महत्त्व दिया गया है।[71]

वर्णक्रम योजना के आधार पर संस्कृत के कोश ग्रंथ *वैजयंती, नानार्थ संग्रह* (अजयपाल), *दुर्ग कोश, मंख कोश, मेदिनी कोश* आदि हैं। हिंदी के 'अनेकार्थ' कोशों में विशेष रूप से वर्ण क्रम के अनुसार शब्दों के संयोजन की पद्धति स्वीकृत हुई। उसमें भी अन्त्याक्षर (अर्थात् अंतिम स्वरांत व्यंजन) के आधार पर शब्द-संकलन का क्रम अपनाया गया और थोड़े बहुत कोशों में आदि (प्रथम) वर्ण के अनुसार शब्द-क्रम योजना भी अपनायी गयी है। अन्त्य वर्णानुसारी कोशों की इस योजना का आधार कहीं-कहीं शब्दों का उच्चारण स्थान भी होता था।[72]

इसी आधार पर हिंदी कोशों में, तीन तरह के कोश हैं—

---

[70] ओटो जेस्पर्सन (1951), द फ़िलॉसफ़ी ऑफ़ ग्रामर : 36.

[71] अ- ना.रा.कालभोर (1901), *हिंदी कोश साहित्य* (समीक्षात्मक अध्ययन), सुंदर साहित्य सदन, बैतूल (मध्य प्रदेश): 27-29 ब - युगेश्वर (1971), *हिंदी कोश विज्ञान का उद्भव और विकास* : भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी : 106.

[72] करुणापति त्रिपाठी एवं अन्य (1975), *हिंदी शब्द सागर*, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी : 7.

1. आद्यवर्णानुसारी पद्धति पर आधारित कोश।
2. अन्त्य वर्णानुसारी पद्धति पर आधारित कोश।
3. आद्य और अन्त्य दोनों वर्णों के अनुसार शब्द-संकलन करने वाले कोश।

(अ) आद्य वर्णानुसारी पद्धति पर आधारित कोश

इसमें केवल एकाक्षरी कोश को ही स्थान दिया जा सकता है।[73]

कनककुशल कृत *लखपतमंजरी नाममाला,* वीरभाण की *एकाक्षरनाममाला,* उदयराम द्वारा रचित *एकाक्षरी नाममाला,* सुधाकलशमुनि के कोश *एकाक्षर नाममाला* और विश्वशम्भु रचित *एकाक्षरनाममालिका* आदि।

वीरभाणकृत *एकाक्षरीनाममाला* में स्वरों के अतिरिक्त देवनागरी व्यंजनों का कोई क्रम नहीं है। 'क' के ही अंतर्गत 'कं' तथा 'कु' अक्षर के भी अर्थ दिये गये हैं। यह व्यवस्था अन्य वर्णों के एकाक्षर वर्णों के अनुक्रम में भी है। स्वरों में ऋ, ॠ तथा ऌ, ॡ दोनों सम्मिलित हैं। उ, ऊ दो बार आये हैं। व्यंजनों के एकादश स्वरांत रूपों (ख, खा, खि, खी, खु, खू, खे, खै, खो, खौ, खं) के अर्थ क्रमशः दिये गये हैं, केवल विसर्ग(:) में अंत होने वाले अक्षर नहीं हैं। उदयराम के कोश में चों, झौ, ढं, थं, ण के अर्थ नहीं हैं तथा ह के पश्चात् एक दोहे में ल के अर्थ भी दिये गये हैं। त्र और ज्ञ के अर्थ नहीं है। *सुबोध चंद्रिका* में त्र और ज्ञ को छोड़कर शेष सभी स्वरों या स्वरांत व्यंजनों के अर्थ दिये गये हैं। अव्यय एकाक्षरों के भी अर्थ दोनों के अंतिम अंश में दिये गये हैं किंतु उनमें कोई सुव्यवस्थित क्रम नहीं मिलता। ये कोश संस्कृत कोशों की परिपाटी का अनुकरण करते हैं और इनका आधार दोहा छंद हैं।

(ब) अन्त्यवर्णानुसारी पद्धति

संस्कृत कोशों में से अधिकांश में इस पद्धति का प्रयोग किया गया है। हिंदी में इस पद्धति के कोशों में केवल भिखारीदास के कोश *नामप्रकाश* के तृतीय काण्ड में अनेकार्थ वर्ग में ही अंतिम वर्ण के अनुसार शब्दों को संयोजित किया[74] गया है। *अमरकोश* के अनेकार्थ वर्ग के आधार पर इसमें 'क' से समाप्त होने वाले शब्द (कांत), जैसे, पंचक, करक, विनायक, वृश्चिक और प्रतीक एक क्रम में मिलते हैं और 'र' से समाप्त होने वाले (रांत) जैसे, अभिहार, विष्टर, परिवार, सार, दुरोदर, मत्सर दूसरे क्रम में मिलेंगे। इसमें मुख्य रूप से अकारांत व्यंजनों से समाप्त होने वाले शब्द ही अधिक हैं तथा व्यंजनों में ङ, छ, झ, ञ, ड़ और ढ़ से समाप्त होने वाले शब्द नहीं हैं।

एक ओर कोश रचना के लिए *अमरकोश* का आधार लेना और दूसरी तरफ़ शब्दों के हिंदीकरण की प्रवृत्ति ने शब्द-संयोजन में कुछ दिक़्क़तें अवश्य पैदा कर दीं। लघुका (लघु) शब्द को 'घ' से समाप्त होने वाले (घांत)शब्दों के अंतर्गत रखना और बाजी (वाजिन) को 'न' से अंत होने वाले (नांत) शब्दों के साथ रखना इसी प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप है।

(स) आद्य और अन्त्य दोनों वर्णों के अनुसार शब्द-संकलन

इस प्रकार के शब्द-संकलन से कोश में शब्द की स्थिति के विषय में भ्रम होने की बहुत कम सम्भावना

---

[73] वही : आद्य वर्णानुसारी पद्धति पर आधारित अंग्रेज़ी वर्णक्रम के अनुसार गिलक्राइस्ट कृत *अ वाकेबुलेरी : हिंदुस्तानी एण्ड इंग्लिश,* उर्दू वर्णक्रम के अनुसार *टेलर कृत ए डिक्शनरी: हिंदुस्तानी एण्ड इंग्लिश* और देवनागरी वर्णक्रम के आधार पर पादरी आदम कृत *हिंदवी कोश* भी हैं. परंतु आलोच्य विषय से इतर होने के कारण इनका विवेचन नहीं किया जा रहा है.

[74] कादि वर्त्त द्वय अंत क्रम समझो बुद्धि समर्थ. इक इक शब्दनि को कही प्रगटि अनेकनि अर्थ. — *नामप्रकाश,* वही : 309.

रहती है। इसीलिए *मेदिनी कोश, विश्वकोश* और *रसभ कोश* में यह पद्धति अपनायी गयी है। हिंदी कोशों में मिर्ज़ा ख़ाँ के कोश *तुहफतुलहिंद* में संकलित 'लुगत-ए-हिंदी' का शब्द-नियोजन इसी पद्धति पर हुआ है, परंतु यह कोश भी आलोच्य विषय से इतर है इसलिए इस पर चर्चा नहीं की जा रही है।

वर्णक

किसी परिवेश विशेष को सर्वांगीण सजीव तथा सहज बनाने के लिए जिन-जिन शब्दों की आवश्यकता पड़ती है उसको दृष्टिगत करते हुए जिस कोश में शब्द संकलित किये जाते हैं, उसे वर्णक कहते हैं। मध्यकालीन कोशों का एक अन्य प्रकार वर्णक है। ज्योतिरीश्वर कवि आचार्य शेखर द्वारा हिंदी (मैथिली) में निर्मित कोश, *वर्णरत्नाकर,* मिला है,[75] जो संस्कृत और हिंदी भाषा के एक भाव या क्रम में आये हुए विविध शब्दों का संग्रह है। शब्दों के संग्रह के अतिरिक्त वर्णरत्नाकर में अनेक उपमाओं, विभिन्न रीति-रिवाजों, प्रथाओं और काव्य ग्रंथों में प्रयुक्त होने वाले उपादानों का भी संग्रह किया गया है। 'वर्णकों' की भारतीय साहित्य में एक सुनिश्चित परम्परा है।

उपलब्ध *वर्णरत्नाकर* गद्य में निर्मित है। अन्य कोश पद्य में निर्मित मिलते हैं जिनका विभाजन 'काण्ड' या 'वर्ग' शैली में किया गया है। परंतु वर्णरत्नाकर में 'कल्लोल' (तरंग या लहर) शीर्षक देकर इस कोश ग्रंथ को सात कल्लोलों में विभाजित किया गया है— समस्त ग्रंथ 'रत्नाकर' (समुद्र) है। प्रत्येक कल्लोल में विशिष्ट वस्तुओं के 'नाम' न देकर 'वर्णन' दिये गये हैं, जैसे नगर वर्णन, नायिका वर्णन, श्मशान वर्णन। इन वर्णनों का संग्रह प्रसिद्ध काव्य ग्रंथों और तत्कालीन कवि प्रसिद्धियों के आधार पर हुआ है। इनका उपयोग अन्य कोशों की भाँति काव्य साधकों के लिए असीम था। कविता में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली, उपमान, रूढ़ प्रयोगों की एक लम्बी तालिका प्रस्तुत वर्णक संग्रह जैसे कोश ग्रंथ में उपलब्ध हो जाएगी, जिसका आवश्यकतानुसार तुरंत उपयोग किया जा सकता है। एक नौसिखिये कवि के लिए ऐसे कोश ज़रूरत के हिसाब से तुरंत शब्दों की प्राप्ति कराते हैं। इस दृष्टि से *रॉजेट थिसॉरस* के निर्माण के पूर्व ही वर्णक, पीटर मार्क रॉजेट के उद्देश्य 'सही समय पर उचित शब्द की शीघ्रता से प्राप्ति' की पूर्ति करता है।

अन्य कोशों से तुलना और समानता की दृष्टि से वर्णक कोश बिल्कुल भिन्न और विशिष्ट हैं, क्योंकि न तो इनमें पिछले पन्नों में चर्चा किये गये समानार्थी कोशों की शैली में शब्दों के पर्याय संकलित किये गये हैं और न अनेकार्थी कोशों के समान एक शब्द के अनेक अर्थ ही। ये न तो 'अर्थ' कोश हैं न ज्ञान कोश। इतने भिन्न होते हुए भी यह वर्णक शब्द-संग्रह करने वाले कोश हैं और डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी इनको स्पष्ट रूप से कोश मान चुके हैं।[76] ये एक प्रकार के गद्य में बद्ध शब्द-भण्डार हैं जिनमें समान जाति, अवस्था एवं लाघव के आधार पर शब्दों का काव्यात्मक संग्रह किया गया है। इस प्रकार वर्णक कोशों को समानार्थी कोशों के समकक्ष रखा जा सकता है।

हिंदी पर्यायकोशों में शब्दार्थ संयोजन

मध्यकाल में निर्मित नाममालाएँ आधुनिक काल में पर्यायवाची कोशों के अनेक प्रकारों के रूप में

---

[75] वही : हिंदी कोश साहित्य ग्रंथ में डॉ. ना. रा. कालभोर ने डॉ. भोगीलाल सांडेसरा के वर्णक समुच्चय का जिक्र किया है जिसमें छोटे-बड़े 12 वर्णक संकलित हैं.

[76] ज्योतिरीश्वराचार्य (1940), *वर्णरत्नाकर* (सं) सुनीतिकुमार चैटर्जी, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल : 21.

[77] अ-रामचंद्र वर्मा (1965), *शब्दार्थ मीमांसा,* प्रबंध प्रकाशन, दिल्ली : 88; ब-भोलानाथ तिवारी (1963), ज्ञानमण्डल, वाराणसी : 173; स-ना. रा. कालभोर, वही : 118.

विकसित हुईं।[77] लेकिन इन पर अंग्रेज़ी कोश विज्ञान विशेष रूप से थिसॉरस का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। अत: इस दृष्टि से हिंदी भाषा में कोशों के उनकी रचना प्रक्रिया के आधार पर चार वर्ग सम्भव हैं—

1) विशुद्ध नाममाला कोशों की परम्परा में

शब्द-संकलन और संयोजन में नाममाला कोशों को आधार बनाकर रचे गये कोशों में *हिंदी कोश* (मुंशी राधालाल माथुर, 1873 ई.), *मंगलकोश* (मुंशी मंगलीलाल, 1877 ई.), *हिंदुस्तानी सिनौनिम्स* (फेरला, 1874 ई.), *कोशभूषण* (मुंशी नारायण लाल, 1882 ई.), *श्रीधर भाषा कोश* (पण्डित श्रीधर त्रिपाठी, 1894 ई.), भगवानदास *शब्दसागर* (भगवानदास), *गौरी नागरी कोश* (पण्डित गौरी दत्त, 1901 ई.) आदि प्रमुख हैं, लेकिन प्रथम हिंदी पर्यायवाची कोश का श्रेय *हिंदी पर्यायवाची कोश* (श्रीकृष्ण शुक्ल, 1935) को जाता है। आवश्यकतानुसार कोशकार ने कहीं-कहीं संकलित शब्दों से संबंधित टिप्पणियाँ फुटनोट में दी हैं जिससे विषय को समझने में सहायता मिलती है। कहीं-कहीं मुख्य पर्याय के बाद नोट भी दिये गये हैं, जैसे—

भैरव— भूतनाथ। श्वानवाहन। रुद्रमूर्ति। भयंकर। भीमकराल। कालमूर्ति विकराल। भयानक।

नोट— अष्ट भैरवों के नाम— 1. महाभैरव, 2. संहार भैरव और, 3. असितांग भैरव 4. रुरु भैरव, 5. काल भैरव, 6. क्रोध भैरव, 7. ताम्रचूड़ भैरव, 8. चंद्रचूढ़ भैरव।

इसमें शब्दों का क्रम अनिश्चित है, जैसे— सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती। साथ ही पर्यायवाची शब्दों की कोई व्याकरणिक जानकारी नहीं है परंतु इसमें वर्णीकरण पद्धति के अनुसार शब्दों के पर्यायवाची शब्द देने से एक वर्ग के सभी शब्द एक जगह पर सुगमता से मिल जाते हैं। गद्य में होने से निरर्थक शब्दों का संकलन भी यथासम्भव कम हुआ है।

2) थिसॉरस की परम्परा में

1852 में पीटर मार्क रॉजेट ने अपने थिसॉरस निर्माण में अवश्य ही *अमरकोश* से प्रेरणा ली थी[78] लेकिन आधुनिक काल की आवश्यकतानुसार उन्होंने शब्द-संयोजन पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन किये। वर्तमान समय में कई कोशकारों जैसे महेन्द्र चतुर्वेदी और ओमप्रकाश गाबा (*व्यावहारिक पर्याय कोश*, 1972), डॉ. बदरीनाथ कपूर (*हिंदी-अंग्रेज़ी पर्यायवाची* एवं *विपर्याय कोश*), अरविन्द कुमार-कुसुम कुमार (*समांतर कोश*, 1996) ने थिसॉरस से प्रेरणा लीं। आलोच्य विषय से इतर होने के कारण इनका विवेचन नहीं किया जा रहा है।

3) नाममाला और थिसॉरस दोनों से प्रभाव ग्रहण कर निर्मित कोश

इसमें विशेष रूप से डॉ. भोलानाथ तिवारी का बृहत् पर्यायवाची कोश आता है। इसमें शब्द-संकलन तो नाममालाओं के आधार पर हुआ है, लेकिन शब्दार्थ संयोजन थिसॉरस के आधार पर। पहले कोश को विषयानुसार आठ वर्गों में विभक्त किया गया है, फिर वर्गों के अंदर आयीं मुख्य प्रविष्टियों (शब्दों) में संकलित पर्यायों को वर्णानुसार रखा गया है, जैसे—

ग (वर्ग) : मोक्ष - (मुख्य प्रविष्टि) अक्षर, अतिगति, अतिमृत्यु, अनपायिपद, अपवर्ग,

---

[78] रॉजेट ने अमरकोश के अंग्रेज़ी अनुवाद का अवलोकन किया था, जो हेनेरी टी. कोलब्रुक द्वारा, 1808 में बंगाल के सेरामपुर से प्रकाशित हुआ था.

अपुनरावर्तन, अपुनरावृत्ति, अमरपद, अमृत, अमृतत्व (आदि सभी पर्याय वर्णानुसार हैं)। अंत में अक्षरअनुक्रम में एक अनुक्रमणिका भी दी गयी है। इससे शब्दों को खोजना सरल होता है—

आदि –अ
अंइचाताना –ज 494
–क 310, ख 228, ख 299, ख 556, ख 609, ग 12, ग 76, ड 203, ज 45।
अंकगणित –ख 553 आदि

वर्णों के आगे दिये क्रमांक (जैसे 'ज' वर्ण के आगे दिया क्रमांक 494) मूल ग्रंथ में अपनी स्थिति सुनिश्चित करते हैं। इस तरह बृहत् पर्यायवाची कोश एक ही साथ थिसॉरस और नाममाला दोनों की झलक देता है।

4) मात्र शब्दसूची के रूप में और अंग्रेज़ी के पर्याय कोशों पर आधारित–आलोच्य विषय से इतर हैं

नाममालाओं में शब्द-संयोजन संबंधी अध्ययन के आधार पर दो मुख्य पद्धतियाँ प्राप्त होती हैं— विषयानुक्रम एवं वर्णानुक्रम। आधुनिक विद्वानों के अनुसार कोशों में संकलित शब्दों को सरलता से ढूँढ़ने के लिए वर्ण अनुक्रम प्रणाली ही सर्वश्रेष्ठ है, किंतु कई अन्य का मत है कि कोशों में शब्दों का संयोजन अकारादिक्रम के अतिरिक्त किसी अन्य प्रणाली (जैसे विषयानुसार) पर भी आधारित हो सकता है। कोशकारों द्वारा दोनों ही पद्धतियों के प्रयुक्त करने के पीछे एक सबल वैज्ञानिक और तर्कसम्मत कारण है।

प्रत्येक शब्द के दो पक्ष होते हैं आंतरिक एवं बाह्य। बाह्य शब्द से उसके प्रत्यक्ष रूप का पता चलता है वहीं आंतरिक पक्ष शब्द में छिपे अर्थ या भाव की ओर इंगित करता है। प्रथम स्थिति में शब्द के सही अर्थ को जानने की कोशिश की जाती है वहीं दूसरी स्थिति में, ऐसे शब्द की खोज रहती है जो किसी भाव या विचार को सही ढंग से व्यक्त कर दें। प्रथम स्थिति में शब्द के लिए संबंधित अर्थ को ज्ञात करने की चेष्टा की जाती है तो दूसरी स्थिति में भाव या विचार को समुचित रूप से प्रस्तुत करने वाले शब्द की खोज रहती है। सामान्य पाठकों के लिए शब्दों के उचित अर्थ की खोज ही मुश्किल है। इस कारण से ही उनके दृष्टिकोण में सर्वोत्तम कोश वही है जिसमें शब्द अक्षरअनुक्रम में नियोजित हों। लेखकों, विचारकों और कवियों को इस जटिलता का सामना अपेक्षाकृत कम करना पड़ता है उनके सामने दूसरी समस्या ही अधिक आती है। कई बार उनके मस्तिष्क में भाव आते हैं, जिनको सही ढंग से व्यक्त करने के लिए शब्दों की खोज होती है, जिसके लिए विषय के अनुसार शब्दों के संयोजन की पद्धति ही उपयुक्त है।

यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि शब्दों की विषयों या भावों में बाँटकर संकलित करने की पद्धति जितनी संस्कृत और संस्कृत के आधार पर रचे गये हिंदी कोशों में लोकप्रिय हुई उतनी ही पश्चिम में भी।[79] इसी कारण डॉ. भोलानाथ तिवारी ने 'वर्गानुक्रम और विषयानुक्रम' दोनों ही पद्धतियों का, उनकी कमियों और विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, अपने कोश में प्रयोग किया।

आज एक ही कोश में दोनों ही पद्धतियों के एक साथ प्रयोग की आवश्यकता है, और यह प्रणाली उचित भी है।

---

[79] वही.

कोश सूची

अरविंद कुमार और कुसुम कुमार, (1996), *समांतर कोश* (दोनों खण्ड), एन.बी.टी., नयी दिल्ली.
अरविंद कुमार और कुसुम कुमार (1999), *शब्देश्वरी,* राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली.
ओमप्रकाश गाबा (1995), *तुलनात्मक पर्याय कोश,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली.
करुणापति त्रिपाठी एवं अन्य (1975), *हिंदी शब्द सागर,* नागरी प्रचारिणी सभा, काशी.
ज्योतिरीश्वराचार्य (1940), *वर्णरत्नाकर,* सम्पा. सुनीति कुमार चटर्जी, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल.
ज्योतिरीश्वराचार्य (14वीं शती), *वर्णरत्नाकर* (पांडुलिपि), अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ.
नंददास (1942), *नाममाला,* प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग.
पीटर मार्क रॉजेट (1979 क्लासिक अमेरिकन एडीशन, प्रथम 1852), *रॉजेट थिसॉरस ऑफ़ इंग्लिश वर्ड्स ऐंड फ्रेज़ेज़,* एवेनेल बुक्स, न्यूयॉर्क.
बदरीनाथ कपूर (2012), *हिंदी-अंग्रेज़ी पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश,* राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली.
भिखारीदास (1738), *नामप्रकाश,* गुलशन अहमद यंत्रालय, प्रतापगढ़, प्रकाशन वर्ष (1899).
भोलानाथ तिवारी (1954), *बृहत् पर्यायवाची कोश,* किताब महल, इलाहाबाद.
भोलानाथ तिवारी (1963), *भाषा विज्ञान कोश,* ज्ञानमण्डल, वाराणसी.
भोलानाथ तिवारी (2006), *हिंदी पर्यायवाची कोश,* प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली.
महेंद्र चतुर्वेदी और ओमप्रकाश गाबा (1972), *व्यावहारिक पर्यायकोश* , शब्दकार, नयी दिल्ली.
मियाँ नूर (1697), *प्रकाशनाममाला,* आगरा विश्वविद्यालय, आगरा.
रामचंद्र वर्मा (1965), *शब्दार्थ मीमांसा,* प्रबंध प्रकाशन, नयी दिल्ली.
रामचंद्र वर्मा (1967), *शब्दार्थक ज्ञानकोश* , लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
रामचंद्र वर्मा (1997), *प्रामाणिक हिंदी शब्दकोश,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
सुवंश शुक्ल (1805), *उमरावकोश* (हस्तलिखित), प्राप्ति स्थान, काशिराज पुस्तकालय, बनारस.
हरिचरणदास (1781), *कर्णाभरण* (हस्तलिखित), प्राप्तिस्थान मुं.क.मा. हिंदी विद्यापीठ, आगरा.
श्रीकृष्ण शुक्ल (1968), *हिंदी पर्यायवाची कोश* (तृतीय संस्करण), विद्या मंदिर, बनारस.

संदर्भ

उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' (1995),यास्ककृत *निरुक्तम्,* चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी.
कपिलदेव द्विवेदी (1994),*भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
जखमौला, *हिंदी कोश साहित्य* (1500-1800)एवं विवेचनात्मक औरतुलनात्मक अध्ययन (शेष जानकारी उपलब्ध नहीं).
जे.वी. कुलकर्णी (1988), *हिंदी शब्दकोशों का उद्‌भव और विकास,* प्रभा प्रकाशन, इलाहाबाद.
डी.बी. सेन शर्मा (1987), *संस्कृत कोशों का उद्‌भव और विकास,* हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़.
ना. रा. कालभोर (1981), *हिंदी कोश साहित्य* (समीक्षात्मक अध्ययन), सुन्दर साहित्य सदन, बैतूल.
बालमुकुन्द द्विवेदी (1979), *संस्कृत कोश उद्‌भव और विकास,* स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद.
भोलानाथ तिवारी (1979), *कोश विज्ञान,* शब्दकार, दिल्ली.
भोलानाथ तिवारी (1982), *शब्द-विज्ञान,* शब्दकार, दिल्ली.
भोलानाथ तिवारी (1991),*भाषा विज्ञान* , किताब महल, दिल्ली.
युगेश्वर (1971), *हिंदी कोश विज्ञान का उद्‌भव और विकास* , भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी.
युधिष्ठिर मीमांसक (1983), *संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास,* चौखम्भा ऑरिएंटालिया, वाराणसी.
शिवमूर्ति शर्मा (1980), आचार्य हेमचंद्र (चित देशीनाममाला का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन.
रामचंद्र वर्मा (1952), *कोशकला,* साहित्य रत्नमाला, बनारस.
हरदेव बाहरी (1985), *हिंदी सीमेंटिक्स,* मानसधाम, दिल्ली.
हरगोविन्द शास्त्री (1968), *अमरकोश मणिप्रभा* (हिंदी व्याख्या), चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी.